साांध्य दैनिक

नई दृष्टिबिंदु

सच की शक्ति, जनता की दृष्टि

PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

वर्ष–01 अंक–98 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, मंगलवार 28 अप्रैल 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए

सु-विचार

" वक्त और टीचर में थोड़ा सा फर्क होता है टीचर सीखा कर इम्तेहान लेता है और वक्त इम्तेहान लेकर सिखाता है...!! "

अज्ञात...

धर्मांतरण के लिए विदेशी फंडिंग का बड़ा खुलासा, ईडी की छापेमारी में 'द टिमोथी इनिशिएटिव' की भूमिका आई सामने

नरेन्द्र डाकलिया / रायपुर

छत्तीसगढ़ में अवैध धर्मांतरण और उसके लिए हो रही विदेशी फंडिंग का एक बड़ा नेटवर्क उजागर हुआ है। प्रवर्तन निदेशालय की हालिया छापेमारी में यह बात सामने आई है कि राज्य के नक्सल प्रभावित और दुर्गम इलाकों में विदेशी पैसे का इस्तेमाल धर्म परिवर्तन कराने के लिए किया जा रहा था। इस पूरे मामले के केंद्र में अंतरराष्ट्रीय चर्च-प्लांटिंग संस्था 'द टिमोथी इनिशिएटिव' का नाम सामने आया है।

डेविड चाको की भूमिका और जांच

इस पूरे मामले में डेविड चाको का नाम 'मिशनरी कमांडर' के तौर पर उभरा है। आरोप है कि चाको ने इस मॉड्यूल का इस्तेमाल करके छत्तीसगढ़ के सरगुजा और बस्तर संभाग में अपना नेटवर्क फैलाया था। उस पर पहले भी गंभीर आरोप लग चुके हैं और उसके खिलाफ पुलिस मामले भी दर्ज हुए हैं। हालांकि, वह वर्तमान में जमानत पर बाहर है, लेकिन ईडी की जांच में उसके और टीटीआई के संबंधों की परतें फिर से खुल रही हैं।

विदेशी एटीएम कार्ड से निकाला गया 6.5 करोड़

जांच एजेंसियों को मिली जानकारी के अनुसार, सिहावा-नगरी, अंतागढ़, कोयलीबेड़ा और नारायणपुर जैसे इलाकों में विदेशी बैंकों के एटीएम कार्डों के माध्यम से करीब 6 .5 करोड़ रुपये की निकासी की गई। ईडी को संदेह है कि विदेशों से आने वाली यह धनराशि सीधे धर्मांतरण की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए भेजी जा रही थी। इस काम को अंजाम देने के लिए स्थानीय स्तर पर एनजीओ और अन्य माध्यमों का सहारा लिया गया।

कड़ा रुख और नया कानून

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने इस मामले पर सख्त रुख अपनाते हुए कहा है कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विदेशी फंडिंग और धार्मिक गतिविधियों के नाम पर हो रहे इस खेल की विस्तृत जांच की जाएगी। दोषी पाए जाने वालों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

राज्य सरकार ने धर्मांतरण के खिलाफ अपने कानूनों को और अधिक सख्त बना दिया है:

क्या है 'द टिमोथी इनिशिएटिव' और इसका मोडस ऑपरेंडी ?

संगठन का स्वरूप : 'द टिमोथी इनिशिएटिव' अमेरिका स्थित एक अंतरराष्ट्रीय संस्था है, जिसकी स्थापना डॉ. डेविड नेल्म्स ने की थी। इसका मुख्यालय नॉर्थ कैरोलिना में है और यह भारत सहित दुनिया के 30 से अधिक देशों में सक्रिय है।

प्रशिक्षण मॉड्यूल : आरोप है कि TT। अपने 'पाल-टिमोथी' नामक बहुस्तरीय प्रशिक्षण मॉड्यूल के जरिए लोगों को धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित करता था।

वित्तीय जाल : इस नेटवर्क को सुचारू रूप से चलाने के लिए विदेशी फंडिंग का उपयोग किया जा रहा था। ट्रेवल वाउचर, डेबिट कार्ड और नकदी का उपयोग कर इसे उन समूहों तक पहुँचाया जाता था जो जमीनी स्तर पर काम कर रहे थे।

नया धर्म स्वतंत्रता विधेयक: राज्य में नया विधेयक मंजूर हो चुका है, जिसमें धर्मांतरण के लिए लालच, बल या गलत जानकारी देने पर 7 से 10 साल तक की जेल और न्यूनतम 5 लाख रुपये का जुर्माना तय किया गया है।

अल्पसंख्यकों/आदिवासियों के लिए विशेष प्रावधान: यदि पीड़ित व्यक्ति नाबालिग, महिला, अनुसूचित जाति या जनजाति से है, तो सजा को बढ़ाकर 10 से 20 साल और जुर्माना 10 लाख रुपये तक किया गया है।

सामूहिक धर्मांतरण: सामूहिक रूप से धर्मांतरण कराने पर 10 साल से लेकर आजीवन कारावास तक का प्रावधान है। दोबारा अपराध करने पर सीधे उम्रकैद हो सकती है।

जांच का अगला चरण

पुलिस और केंद्रीय जांच एजेंसियां इस नेटवर्क से जुड़े करीब एक दर्जन लोगों की सूची तैयार कर चुकी हैं। बताया जा रहा है कि इस सूची में कुछ ऐसे नाम भी शामिल हैं जिनका संबंध राजनीतिक दलों से है। फिलहाल, सभी संदिग्धों की भूमिका की गहराई से जांच की जा रही है ताकि विदेशी फंडिंग के इस पूरे तंत्र को ध्वस्त किया जा सके।

पुष्पा स्टाइल में नशे की खेप, अतरमरा पुल नीचे तैरते मिला 73 किलो पैकेट में बंद गांजा

नई दृष्टिबिंदु / गरियाबंद

जिले में नशा तस्करों के नए-नए हथकंडे सामने आ रहे हैं। उड़ीसा सीमा से लगे इलाकों में पहले लकड़ी तस्करी और अब गांजा तस्करी का अनोखा तरीका सामने आया है। पाण्डुका थाना क्षेत्र के ग्राम अतरमरा में सिंचाई नहर के पानी में तैरते हुए करीब 73 किलो गांजा मिलने से पूरे इलाके में हड़कंप मच गया।

जानकारी के मुताबिक, अतरमरा पंचायत के बड़े पुलिया के नीचे ग्रामीणों ने पानी में संदिग्ध पैकेट तैरते देखे। देखते ही देखते मौके पर लोगों की भीड़ जुट गई। जब पैकेट बाहर निकाले गए तो उनमें गांजा भरा हुआ मिला।

17 पैकेट, कीमत 15 लाख रुपए से ज्यादा

मौके से कुल 17 पैकेट बरामद किए गए, जिनमें लगभग 73 किलो गांजा था। इसकी बाजार कीमत 15 लाख रुपये से अधिक बताई जा रही है। इस तरह खुलेआम नहर में तैरती नशे की खेप मिलने से लोगों में भय और कौतूहल दोनों का माहौल है।

पुलिस ने किया जब्त, जांच शुरू

मामले की सूचना मिलते ही पाण्डुका थाना प्रभारी कृष्ण कुमार जांगड़े टीम के साथ मौके पर पहुंचे और सभी पैकेट जब्त कर लिए। पुलिस ने अज्ञात तस्करों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस से बचने के लिए अपनाया नया तरीका?

प्रारंभिक जांच में आशंका जताई जा रही है कि तस्करों ने पुलिस दबाव या पकड़ से बचने के लिए गांजा की खेप को नहर में बहा दिया होगा। यह भी संभावना है कि खेप उड़ीसा सीमा से जतमई मार्ग या आसपास के गांवों के जरिए यहां तक पहुंचाई गई हो।

बड़े नेटवर्क की आशंका

स्थानीय लोगों का कहना है कि अतरमरा क्षेत्र पहले भी अवैध गांजा कारोबार को लेकर चर्चा में रहा है। ऐसे में इस बरामदगी ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं—क्या यह किसी बड़े तस्करी नेटवर्क का हिस्सा है? क्या अब पानी के रास्ते नशे की सप्लाई का नया ट्रेंड शुरू हो रहा है?

फिलहाल पुलिस पूरे मामले की बारीकी से जांच कर रही है। आने वाले दिनों में इस नशे के नेटवर्क से जुड़े बड़े खुलासे होने की संभावना जताई जा रही है।

भारतमाला घोटाले की जांच ने पकड़ी रफ्तार

500 करोड़ से अधिक की अनियमितताओं पर ईडी का शिकंजा, कई ठिकानों पर छापे

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

भारतमाला परियोजना में भूमि अधिग्रहण मुआवजे से जुड़े कथित मनी लॉन्ड्रिंग मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने अपनी कार्रवाई तेज करते हुए छत्तीसगढ़ के कई जिलों में बड़े पैमाने पर छापेमारी की है। सोमवार को धमतरी के कुरूद, रायपुर के अभनपुर समेत कई स्थानों पर एक साथ सर्च ऑपरेशन चलाया गया। प्रारंभिक जांच में 500 करोड़ रुपये से अधिक की वित्तीय अनियमितताओं के संकेत मिलने से मामला और गंभीर हो गया है।

फर्जी दस्तावेज और बैकडेटेड एंट्री से खेला गया खेल

जांच एजेंसियों के मुताबिक, भूमि अधिग्रहण के बाद फर्जी विभाजन, जाली दस्तावेज और बैकडेटेड राजस्व प्रविष्टियों के जरिए मुआवजे की राशि को बढ़ाया गया। आरोप है कि अपात्र लोगों और रिश्तेदारों को लाभ पहुंचाने के लिए रकम को अलग-अलग बैंक खातों के जरिए घुमाया गया।

डिजिटल और वित्तीय साक्ष्य खंगाल रही एजेंसियां

ईडी अब जब्त दस्तावेजों, इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड और बैंकिंग ट्रेल की गहन जांच कर रही है। अधिकारियों का मानना है कि यह सिर्फ शुरुआती परत है और आने वाले दिनों में इस नेटवर्क से जुड़े और बड़े नाम सामने आ सकते हैं।

बढ़ सकता है जांच का दायरा

सूत्रों के अनुसार, इस घोटाले की कड़ियां दुर्ग, पाटन, राजनांदगांव और मगरलोड तक फैली हुई हैं। ऐसे में जांच का दायरा और विस्तृत होने की संभावना जताई जा रही है।

कुरूद से अभनपुर तक छापेमारी, राजनीतिक कनेक्शन चर्चा में

ईडी की टीम तड़के कुरूद के सरोजिनी चौक स्थित भूपेंद्र चंद्राकर के निवास पहुंची, जहां सीआरपीएफ की मौजूदगी में सघन तलाशी ली गई। बताया जा रहा है कि भूपेंद्र चंद्राकर का संबंध पूर्व मंत्री अजय चंद्राकर से है, जिससे यह मामला राजनीतिक रूप से भी सुर्खियों में आ गया है। इसी तरह रोशन चंद्राकर और अभनपुर के जमीन कारोबारी गोपाल गांधी के परिसरों पर भी एक साथ कार्रवाई की गई।

पहले भी हो चुकी है बड़ी कुर्की और गिरफ्तारी

इस मामले में ईडी पहले ही 23 .35 करोड़ रुपये की संपत्ति कुर्क कर चुकी है, जबकि कुल गबन की राशि 27 .05 करोड़ रुपये आंकी गई थी। एसीबी-ईओडब्ल्यू की कार्रवाई में कई राजस्व अधिकारी और पटवारी गिरफ्तार हो चुके हैं। फरवरी 2026 में दो फरार तहसीलदारों की गिरफ्तारी और जनवरी में तीन पटवारियों के खिलाफ चालान इस घोटाले की गंभीरता को दर्शाते हैं।

बड़ा सवाल—क्या बड़े चेहरों तक पहुंचेगी कार्रवाई?

जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ रही है, यह सवाल भी तेज हो रहा है कि क्या एजेंसियां इस घोटाले के असली मास्टरमाइंड तक पहुंच पाएंगी या कार्रवाई निचले स्तर तक सीमित रह जाएगी। फिलहाल ईडी की सक्रियता ने प्रदेश में हलचल जरूर बढ़ा दी है।

चलती स्कूटी पर 'रोमांस स्टंट' का वीडियो वायरल, बिलासपुर में लापरवाही ने बढ़ाया खतरा

नई दृष्टिबिंदु / बिलासपुर

शहर के बिलासपुरझरतनपुर रोड पर ट्रैफिक नियमों की खुलेआम धज्जियां उड़ाने का एक खतरनाक वीडियो सामने आया है। वायरल हो रहे इस वीडियो में तेज रफ्तार स्कूटी पर सवार तीन युवक-युवती जोखिम भरा स्टंट करते नजर आ रहे हैं, जिसमें पीछे बैठा कपल चलते वाहन पर ही रोमांस करता दिख रहा है।

रफ्तार के बीच रोमांस, हादसे का खतरा

वीडियो में साफ दिख रहा है कि एक युवक स्कूटी चला रहा है, जबकि पीछे बैठे कपल बेखौफ होकर रोमांटिक हरकतें कर रहे हैं। आसपास से लगातार वाहन गुजरते रहे, लेकिन तीनों को न अपनी सुरक्षा की चिंता दिखी और न ही दूसरों की। यह लापरवाही किसी भी वक्त बड़े हादसे में बदल सकती थी।

बिना हेलमेट, नियमों की खुली अनदेखी

तीनों युवक-युवती बिना हेलमेट के तेज रफ्तार में स्टंट करते नजर आए। सड़क के बीच इस तरह की हरकत न केवल मोटर व्हीकल एक्ट का उल्लंघन है, बल्कि अन्य राहगीरों की जान के लिए भी गंभीर खतरा पैदा करती है।

वीडियो वायरल, लोगों में छाई नाराजगी

सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होते ही लोगों का गुस्सा फूट पड़ा है। यूजर्स इसे चलती सड़क पर मौत से खिलवाड़ बताते हुए कड़ी कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि यदि ऐसे मामलों पर सख्ती नहीं बरती गई, तो सड़क हादसों की संख्या और बढ़ सकती है।

पुलिस कार्रवाई पर टिकी निगाहें

अब सबकी नजर पुलिस की कार्रवाई पर टिकी है। लोगों की मांग है कि वीडियो के आधार पर आरोपियों की पहचान कर उनके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में कोई इस तरह की लापरवाही करने की हिम्मत न कर सके।

डूंगरिया के शमशान घाट में सुविधाओं का अभाव, पानी को तरस रहे ग्रामीण

अंतिम संस्कार जैसे संवेदनशील मौके पर भी मूलभूत व्यवस्था नहीं, जिम्मेदार बेखबर

गोवर्धन प्रसाद ताम्रकार / नंदिनी अहिवारा

कोरिया ग्राम पंचायत के आश्रित गांव डूंगरिया में स्थित शमशान घाट की बदहाली ने प्रशासनिक लापरवाही की पोल खोल दी है। यहां अंतिम संस्कार जैसे संवेदनशील कार्य के लिए आने वाले ग्रामीणों को पानी जैसी बुनियादी सुविधा तक नसीब नहीं हो रही है। हालात यह हैं कि शोक संतप्त परिवारों को अपने साथ पानी लाना पड़ता है, वरना उन्हें भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

ग्रामीणों का आरोप है कि कई बार पंचायत और संबंधित अधिकारियों को इस समस्या से अवगत कराया गया, लेकिन आज तक कोई ठोस पहल नहीं की गई। शमशान घाट में न तो पानी की व्यवस्था है, न छाया के लिए शेड, और न ही बैठने की कोई सुविधा। गर्मी के इस मौसम में हालात और भी भयावह हो जाते हैं, जब लोग तेज धूप में घंटों खड़े रहने को मजबूर होते हैं।

सबसे गंभीर बात यह है कि जिस स्थान पर अंतिम संस्कार जैसे अत्यंत संवेदनशील और सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण कार्य होते हैं, वहां भी बुनियादी सुविधाओं का अभाव प्रशासन की उदासीनता को दर्शाता है। ग्रामीणों का कहना है कि विकास के दावों के बीच डूंगरिया का शमशान घाट उपेक्षा का जीता-जागता उदाहरण बन गया है।

अब सवाल यह उठता है कि क्या जिम्मेदार अधिकारी किसी बड़े हादसे या जनआक्रोश का इंतजार कर रहे हैं? ग्रामीणों ने मांग की है कि जल्द से जल्द शमशान घाट में पानी, शेड और अन्य आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं, ताकि लोगों को इस पीड़ा से राहत मिल सके।

राशन व गैस की समस्या को लेकर कांग्रेस का प्रदर्शन, जिला खाद्य कार्यालय का किया घेराव

शासकीय उचित मूल्य दुकानों में बीपीएल हितग्राहियों को निर्धारित राशन नहीं दिया जा रहा

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

शहर में गरीबों को समय पर राशन और शक्कर नहीं मिलने की शिकायतों को लेकर कांग्रेस ने सोमवार को जिला खाद्य कार्यालय का घेराव किया। यह प्रदर्शन जिला कांग्रेस अध्यक्ष धीरज बाकलीवाल के नेतृत्व में किया गया, जहां कार्यकर्ताओं ने खाद्य अधिकारी को ज्ञापन सौंपकर जल्द समाधान की मांग की।

प्रदर्शन के दौरान धीरज बाकलीवाल ने कहा कि नगर निगम क्षेत्र के विभिन्न वार्डों से लगातार शिकायतें मिल रही हैं कि शासकीय उचित मूल्य दुकानों में बीपीएल हितग्राहियों को निर्धारित राशन नहीं दिया जा रहा है। अप्रैल माह समाप्त होने को है, इसके बावजूद शत-प्रतिशत राशन वितरण नहीं हो पाया है और शक्कर भी दुकानों तक नहीं पहुंची है।

उन्होंने बताया कि इस लापरवाही के कारण गरीब और जरूरतमंद परिवारों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। भीषण गर्मी में महिलाएं और बुजुर्ग बार-बार राशन दुकानों के चक्कर लगाने को मजबूर हैं, फिर भी उन्हें उनका हक नहीं मिल पा रहा है। यह स्थिति गंभीर और चिंताजनक है क्योंकि शासन की योजनाओं का लाभ वास्तविक हितग्राहियों तक नहीं पहुंच रहा।

कांग्रेस नेताओं ने खाद्य अधिकारी अनुराग भदौरिया से मांग की कि मामले का तत्काल संज्ञान लेकर सभी राशन दुकानों की जांच कराई जाए और हितग्राहियों को समय पर पूर्ण राशन उपलब्ध कराया जाए। साथ ही गैस सिलेंडर की समस्या को दूर करने और गैस एजेंसियों की नियमित मॉनिटरिंग की भी मांग उठाई गई।

इस पर खाद्य अधिकारी अनुराग भदौरिया ने आश्वासन दिया कि 3 से 4 दिनों के भीतर शत-प्रतिशत राशन वितरण सुनिश्चित कर दिया जाएगा।

इस दौरान ब्लॉक अध्यक्ष अल्ताफ अहमद, देव साहू, मनीष बघेल, दीपक साहू, प्रवक्ता नासिर खोखर, सुशील भारद्वाज, अजय शर्मा, विजेंद्र भारद्वाज, प्रकाश जोशी, ओमप्रकाश जोशी, ज्ञानदास बंजारे, पोषण साहू, प्रेमलता साहू, विमल यादव, अविनाश यादव, शिवाकांत तिवारी, प्रीतम देशमुख, देव सिन्हा, चिराग शर्मा, आयुष शर्मा, अमोल जैन, राजकुमार वर्मा सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

खास खबर

कलेक्टर अभिजीत सिंह ने प्राचीन पांडुलिपियों के संरक्षण एवं डिजिटलीकरण पर दिए दिशा-निर्देश

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

कलेक्टर अभिजीत सिंह ने प्राचीन पांडुलिपियों के संग्रहकर्ता राम कुमार वर्मा से मुलाकात कर उनके द्वारा संकलित दुर्लभ पांडुलिपियों का अवलोकन किया। इस दौरान कलेक्टर ने पांडुलिपियों के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व पर विस्तृत चर्चा की। कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि प्राचीन पांडुलिपियां हमारी समृद्ध विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जिनका संरक्षण एवं संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। कलेक्टर अभिजीत सिंह ने कहा कि जिले के आम नागरिकों से अपील करता हूं कि अगर आपके पास प्राचीन पांडुलिपिया उपलब्ध है तो जिला प्रशासन से संपर्क कर या फिर क्षेत्र सर्वेयरों से संपर्क कर उसे प्रशासन को अवश्य उपलब्ध कराएं। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि इन पांडुलिपियों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करते हुए चरणबद्ध तरीके से डिजिटल माध्यम में परिवर्तित कर निर्धारित पोर्टल पर अपलोड किया जाए, ताकि यह अमूल्य धरोहर आमजन एवं शोधकर्ताओं के लिए सुलभ हो सके।

अधिकारी-कर्मचारियों को वाहन चलाते समय अनिवार्य रूप से करें हेलमेट और सीटबेल्ट का उपयोग -कलेक्टर

कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी दुर्ग द्वारा जारी निर्देशानुसार सभी शासकीय अधिकारी-कर्मचारियों को वाहन चलाते समय अनिवार्य रूप से हेलमेट/सीटबेल्ट धारण करने हेतु निर्देशित किया गया है। जिला दण्डाधिकारी दुर्ग द्वारा जारी आदेश के अनुसार शासकीय कार्यालयों में पदस्थ समस्त अधिकारी एवं कमर्चारियों को स्वयं की सुरक्षा तथा सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के उद्देश्य से दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट तथा चारपहिया वाहन चलाते समय सीटबेल्ट अनिवार्य रूप से धारण करने के निर्देश दिए गए हैं। निर्देशों का पालन सुनिश्चित करने तथा यातायात नियमों के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु सभी विभाग प्रमुखों को अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारियों से पालन कराया जाना सुनिश्चित करने कहा गया है। यातायात पुलिस दुर्ग एवं जिला प्रशासन आमजन से भी अपील करता है कि सुरक्षा नियमों का पालन कर सुरक्षित यातायात व्यवस्था में सहयोग प्रदान करें।

जिले में सही दवा-शुद्ध आहार अभियान का आगाज

पहले ही दिन औषधि और खाद्य सुरक्षा टीम ने की बड़ी कार्यवाही

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

छत्तीसगढ़ शासन एवं नियंत्रक, खाद्य एवं औषधि प्रशासन के निर्देशानुसार 27 अप्रैल से 11 मई 2026 तक शुद्ध दवा-शुद्ध आहार-यही छत्तीसगढ़ का आधार थीम के अंतर्गत 15 दिवसीय सघन जांच अभियान संचालित किये जाने हेतु प्रत्येक जिले में कार्यरत खाद्य एवं औषधि प्रशासन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निर्देशित किया गया है जिसमें औषधि शाखा द्वारा जिले में कॉस्मेटिक एजेंसीयां, थोक एवं खुदरा औषधि विक्रय फर्म, अस्पताल एवं अस्पतालों से जुडे फार्मेसी में कोल्ड चैन का निरीक्षण किया।

साथ ही निजी एवं शासकीय परिसरों में वैक्सीन संधारण एवं कोल्ड चैन की जांच, स्वापक औषधियों के थोक एवं खुदरा फर्मो में क्रय-विक्रय संबंधित दस्तावेजों की जांच, सार्वजनिक स्थलों पर कोटपा अधिनियम के तहत कार्यवाही एवं जागरूकता अभियान एवं निजी तथा शासकीय अस्पतालों की फार्मेसीयों की जांच/निरीक्षण एवं एडवर्स ड्रग ईवेंट की रिपोर्टिंग प्रक्रियाओं की जांच औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम 1940 नियमावली 1945 के तहत की जाएगी। खाद्य शाखा द्वारा चाट, गुपचुप सेंटर्स, गन्ना रस, सॉफ्ट ड्रिंक्स, आईसक्रीम, जूस सेंटर, डेयरी प्रोडक्ट विक्रेता फर्म, मिठाई दुकान, होटल, रेस्टोरेंट, केक एवं ब्रेकरी प्रोडक्ट विक्रेता फर्म, मिड-डे मिल सेंटर्स, हास्पिटल कैंटीन, पैकेज्ड ड्रिंकिंग वाटर्स, आईस्क्रीम विक्रेता, कन्फेक्शनरी प्रतिष्ठान, ढ़ाबा, फल एवं सब्जी विक्रेता प्रतिष्ठान, पेप्सी, आईसगोला, आईस कैण्डी विक्रेता प्रतिष्ठानों की सघन जांच खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 के तहत की जाएगी।

औषधि शाखा द्वारा जिले में संचालित मेसर्स जलाराम कॉस्मेटिक इंदिरा मार्केट दुर्ग, वर्ल्ड ऑफ ब्यूटी इंदिरा मार्केट दुर्ग, मेसर्स रेडलिप्स कॉस्मेटिक शॉप, नेहरू नगर, भिलाई, मेसर्स वूमनिया मेकअप स्टोर्स, अग्रसेन चौक, नेहरू नगर, मेसर्स प्रकाश जनरल स्टोर्स, आर.एस.एस. मार्केट, पावर हाउस, भिलाई, मेसर्स हर्षित जनरल एण्ड बैंगल्स स्टोर्स पावर हाउस, जवाहर मार्केट, भिलाई एवं मेसर्स के.जी.एन. ज्वेलर्स, जवाहर मार्केट, कैम्प-2, पावर हाउस, भिलाई ऐसे 07 कॉस्मेटिक विक्रय करने वाले फर्मो का निरीक्षण औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम 1940 नियमावली 1945 के तहत किया गया जिसमें किसी भी प्रकार की एलोपैथिक औषधियों का संग्रह करना नहीं पाया गया एवं फर्मो के क्रय-विक्रय रिकार्ड की जांच की गई एवं सख्त निर्देश दिये गए कि उनके द्वारा कास्मेटिक सामान का क्रय अधिकृत विक्रेताओं/एजेंसी से क्रय बिल के माध्यम से किया जाए। भविष्य में भी इस तरह की कार्यवाही निरंतर जारी रहेगी।

खाद्य शाखा द्वारा जिले में विभिन्न क्षेत्रों में संचालित चाट, गुपचुप सेंटर आदि स्ट्रीट वेंडर्स की जांच खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 के तहत किया जा रहा है, जिसमें संचालकों को साफ स्वच्छ पीने योग्य पानी का उपयोग करने हेतु, अखाद्य रंगों का उपयोग नहीं करने हेतु परिसर के आस-पास स्वच्छता रखने हेतु एवं डस्टबीन रखने हेतु निर्देशित किया जा रहा है। नियमों का उल्लंघन पाये जाने पर नियमानुसार कड़ी कार्यवाही की जाएगी।

शहर का कचरा बना उरला रहवासियों के लिए सिरदर्द : अरुण वोरा

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

शहर के उरला क्षेत्र में नगर निगम की लापरवाही अब लोगों के लिए अभिशाप बनती जा रही है। लगातार पूरे शहर का कचरा डंप किए जाने से पूरा इलाका गंदगी और बदबू की चपेट में है, जिससे आम जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। हालात इतने गंभीर हो चुके हैं कि यहां रहना तक मुश्किल होता जा रहा है और बीमारियों का खतरा तेजी से बढ़ रहा है।

करीब 10,000 की घनी आबादी वाले इस क्षेत्र के नागरिकों की शिकायत पर पूर्व विधायक अरुण वोरा मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया। लोगों ने उन्हें बताया कि बार-बार शिकायत के बावजूद निगम प्रशासन ने अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया है। श्री वोरा ने कहा कि : स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण हर नागरिक का अधिकार है। वोरा ने नगर निगम प्रशासन के समक्ष कई समाधान-केंद्रित सुझाव रखे जैसे कि : प्रभावित क्षेत्रों में 24-48 घंटे के भीतर विशेष सफाई अभियान चलाया जाए। रिहायशी इलाकों में कचरा डंप करने की व्यवस्था तुरंत बंद की जाए। SLRM सेंटर के लिए स्कूल और आबादी से दूर उपयुक्त स्थान चिन्हित किया जाए। प्रभावित क्षेत्र में फॉगिंग, एंटी-लार्वा स्प्रे और नियमित सफाई कराई जाए। नागरिकों की शिकायतों के लिए त्वरित रिस्पॉन्स सिस्टम बनाया जाए। लोगों को कचरा अलग-अलग देने और स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जाए।

उन्होंने स्पष्ट किया कि उद्देश्य केवल समस्या उठाना नहीं, बल्कि उसका स्थायी समाधान सुनिश्चित करना है। वोरा ने उम्मीद जताई कि प्रशासन इस विषय को गंभीरता से लेते हुए जल्द ही उचित कचरा प्रबंधन व्यवस्था सुनिश्चित करेगा, ताकि क्षेत्रवासियों को राहत मिल सके। स्थानीय लोगों ने बताया कि कई बार शिकायत करने के बावजूद अब तक समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो पाया है, जिससे कचरे के ढेर लगातार बढ़ते जा रहे हैं। वहीं, उरला गवनर्मेंट हायर सेकेंडरी स्कूल के पास प्रस्तावित SLRM सेंटर को लेकर भी लोगों में चिंता देखी गई। नागरिकों का मानना है कि स्कूल के पास इस तरह का केंद्र बनने से बच्चों के स्वास्थ्य और वातावरण पर असर पड़ सकता है।

निगम प्रशासन और जन-सुविधा के लिए पद-आधारित मोबाइल नंबर किए जारी

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

नगर पालिक निगम भिलाई द्वारा नागरिक सेवाओं को अधिक सुलभ, पारदर्शी और त्वरित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया है। निगम के विभिन्न विभागों के अधिकारियों हेतु शासकीय मोबाइल नंबर जारी किए गए हैं।

इन मोबाइल नंबरों की मुख्य विशेषताएँ और निर्देश निम्नानुसार हैं। ये मोबाइल नंबर विशिष्ट 'पद' के लिए आवंटित किए गए हैं। अधिकारी के स्थानांतरण होने की स्थिति में भी यह नंबर उसी पद पर आने वाले नए अधिकारी के पास उपलब्ध रहेगा।

नागरिकों को अब अधिकारियों के व्यक्तिगत नंबर खोजने की आवश्यकता नहीं होगी। पद-आधारित नंबर होने से आम जनता सीधे संबंधित विभाग के जिम्मेदार अधिकारी से संपर्क कर सकेगी। सफाई, जल प्रदाय, राजस्व, स्वास्थ्य और प्रकाश जैसे आवश्यक विभागों के प्रभारियों के नंबर 24x7 सक्रिय रहेंगे ताकि आपातकालीन स्थितियों में समन्वय स्थापित किया जा सके।

जनता के भरोसे को टूटने नहीं देंगे-पारदर्शिता से ही आगे बढ़ेगा पाटन — नेहा बाबा वर्मा

नई दृष्टिबिंदु / पाटन

नगर पंचायत पाटन की सभापति श्रीमती नेहा बाबा वर्मा ने वार्ड क्रमांक 5 (नया तालाब) एवं वार्ड क्रमांक 12 (दर्री डबरी) में प्रस्तावित तालाब गहरीकरण के विषय पर परिषद बैठक में अपना स्पष्ट एवं सशक्त मत रखते हुए जनहित और पारदर्शिता को सर्वोच्च प्राथमिकता बताया।

उन्होंने सदन को अवगत कराया कि वार्ड क्रमांक 12 के दर्री डबरी क्षेत्र में पूर्व से अवैध मुरम खनन की शिकायतें प्राप्त हो चुकी हैं, जिन पर स्थानीय नागरिकों द्वारा आपत्ति दर्ज कराई गई है। साथ ही इस संबंध में सीजी मितान द्वारा खबर प्रसारित होने के पश्चात प्रशासन को ज्ञापन सौंपकर आवश्यक कार्रवाई की मांग भी की गई है।

श्रीमती वर्मा ने कहा कि ऐसे संवेदनशील मामलों में बिना समुचित जांच एवं स्पष्टता के किसी भी प्रकार का गहरीकरण प्रस्ताव पारित किया जाना उचित नहीं होगा, क्योंकि इससे न केवल परिषद की छवि प्रभावित होती है, बल्कि जनता के बीच गलत संदेश भी जा सकता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि अवैध गतिविधियों के प्रति जीरो टॉलरेंस अपनाया जाना चाहिए तथा हर विकास कार्य केवल नियमानुसार, पारदर्शी प्रक्रिया एवं वैधानिक स्वीकृति के आधार पर ही किया जाना चाहिए।

परिषद बैठक में दोनों पक्षों (सत्ताधारी एवं विपक्षी) के सदस्यों द्वारा विषय पर विस्तृत चर्चा की गई। चर्चा के उपरांत किसान हित एवं जनहित को ध्यान में रखते हुए गहरीकरण कार्य कराए जाने की सहमति बनी, किंतु यह भी स्पष्ट किया गया कि कार्य पूर्ण पारदर्शिता, शासन की निर्धारित गाइडलाइन तथा विधिवत प्राक्कलन एवं स्वीकृति प्राप्त होने के बाद ही आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

इस अवसर पर श्रीमती नेहा बाबा वर्मा ने सदन में उपस्थित सभी सदस्यों से आग्रह किया कि प्रत्येक निर्णय पारदर्शिता, जवाबदेही और नियमों के दायरे में रहकर ही लिया जाए। उन्होंने आगे कहा कि नगर की जनता ने जनप्रतिनिधियों को विश्वास के साथ चुना है और उस विश्वास को बनाए रखना सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने आश्वस्त किया कि नगर में विकास कार्य अवश्य होंगे, लेकिन प्रत्येक निर्णय पारदर्शिता, जवाबदेही और नियमों के दायरे में रहकर ही लिया जाएगा।

मन की बात में छत्तीसगढ़ राज्य का निरंतर जिक्र गौरव की बात : दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अपने लोकप्रिय मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात में छत्तीसगढ़ में काले हिरण के संरक्षण के प्रयासों का उल्लेख किए जाने पर विधायक ललित चंद्राकर ने इसे प्रदेश के लिए गौरवपूर्ण क्षण बताया है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय मंच पर छत्तीसगढ़ की उपलब्धियों का लगातार जिक्र होना न केवल राज्य की पहचान को सुदृढ़ करता है, बल्कि प्रदेशवासियों के मनोबल को भी नई ऊंचाई प्रदान करता है।

विधायक ललित चंद्राकर ने अपने पश्चिम बंगाल प्रवास पर मंतेश्वर विधान सभा में स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ मन की बात की 133वीं कड़ी का श्रवण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मन की बात आज देश के जनमानस को जोड़ने वाला एक सशक्त माध्यम बन चुका है, जिसके जरिए देश के कोने-कोने में हो रहे नवाचार, जनभागीदारी और जमीनी स्तर के उत्कृष्ट प्रयासों को राष्ट्रीय पहचान मिलती है।

विधायक ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक अभिभावक की तरह देशवासियों से संवाद करते हुए न केवल प्रेरणादायक कहानियों को सामने लाते हैं, बल्कि समाज के हर वर्ग को सकारात्मक बदलाव के लिए प्रेरित भी करते हैं। इस संवाद के माध्यम से लोगों में सहभागिता की भावना मजबूत होती है और राष्ट्र निर्माण की दिशा में सामूहिक प्रयासों को नई ऊर्जा मिलती है।

विधायक ने कहा कि छत्तीसगढ़ में काले हिरण संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों का राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेख होना राज्य के लिए विशेष सम्मान का विषय है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरण संरक्षण और जैव विविधता के प्रति प्रदेश की प्रतिबद्धता मजबूत है। साथ ही, यह अन्य राज्यों के लिए भी एक प्रेरणादायक मॉडल के रूप में उभर रहा है।

उन्होंने आगे कहा कि बांस को पेड़ की श्रेणी से अलग कर विशेष श्रेणी में शामिल किए जाने के बाद इसके उपयोग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिससे विशेष रूप से महिलाओं की आय में सकारात्मक बदलाव आया है। इसके साथ ही प्रधानमंत्री द्वारा पवन ऊर्जा की आवश्यकता और संभावनाओं पर दिए गए विशेष जोर का उल्लेख किया छत्तीसगढ़ में भी इस दिशा में निरंतर और ठोस प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे भविष्य में ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा।

इस अवसर पर महेन्द्र पिंटू चोपड़ा, नागेन्द्र मोनू चौधरी सहित स्थानीय कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अनुपालन से संस्कृति की ओर ; बीएसपी में विभागीय सुरक्षा अधिकारियों के लिए गहन कार्यशाला का हुआ आयोजन

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सेल- भिलाई इस्पात संयंत्र के मानव संसाधन विकास केन्द्र के असेंबली हॉल में 27 अप्रैल 2026 को सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग के तत्वावधान में विभागीय सुरक्षा अधिकारियों के लिए एक दिवसीय गहन सुरक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में कार्यपालक निदेशक के. रामकृष्ण एवं कार्यपालक निदेशक राकेश कुमार उपस्थित रहे। इस अवसर पर उपाध्यक्ष एवं प्रमुख राजेन्द्र कुमार सिंह मुख्य वक्ता एवं संकाय सदस्य के रूप में उपस्थित रहे, जिन्होंने अपने दीर्घ औद्योगिक अनुभव के आधार पर महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया।

कार्यक्रम में मुख्य महाप्रबंधक प्रभारी तुषार कांत, मुख्य महाप्रबंधक प्रभारी बीके बेहेरा सहित विभिन्न विभागों के मुख्य महाप्रबंधक, विभागीय सुरक्षा अधिकारी, अतिरिक्त सुरक्षा अधिकारी एवं सेफ्टी इंजीनियरिंग विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आयोजन मुख्य महाप्रबंधक डी. सत्पथी एवं महाप्रबंधक प्रभारी एसके अग्रवाल के नेतृत्व में किया गया, जबकि सहायक महाप्रबंधक शोवन घोष एवं अजय टह्लू कार्यक्रम समन्वयक रहे।

कार्यक्रम का स्वागत उद्बोधन मुख्य महाप्रबंधक डी. सत्पथी ने किया, जिसमें उन्होंने विभागीय सुरक्षा अधिकारियों को कार्यस्थल का पहला सुरक्षा प्रहरी बताते हुए अनुपालन आधारित दृष्टिकोण से आगे बढ़कर सुरक्षा को एक आंतरिक मूल्य के रूप में अपनाने को कहा। मुख्य वक्ता राजेंद्र कुमार सिंह ने अपने व्याख्यान में तीन दशकों से अधिक के औद्योगिक अनुभव साझा करते हुए सुरक्षा पेशेवरों को कार्यस्थल पर सक्रिय उपस्थिति एवं श्रमिकों के साथ प्रत्यक्ष संवाद पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वास्तविक प्रभाव अधिकार से नहीं, बल्कि सहभागिता से आता है। उन्होंने सुरक्षा संस्कृति के विकास को भय से आदत और आदत से आंतरिक संस्कृति तक की यात्रा के रूप में परिभाषित किया तथा असुरक्षित कार्य को रोकने हेतु टीमों को सशक्त बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

कार्यपालक निदेशक के. रामकृष्ण ने अपने संबोधन में संचालन प्रक्रियाओं के निर्धारित क्रम एवं सीमाओं के कठोर अनुपालन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने संयंत्र में उपलब्ध मूल संचालन पुस्तिकाओं के पुनः उपयोग एवं अध्ययन को प्रोत्साहित करते हुए सुरक्षा अधिकारियों की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया।

वहीँ कार्यपालक निदेशक राकेश कुमार ने 360-डिग्री निरीक्षण की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शून्य दुर्घटना का दावा तभी सार्थक है जब संभावित खतरों की पहचान भी सुनिश्चित हो। उन्होंने उपकरणों के स्वास्थ्य के साथ समझौता न करने तथा मानक संचालन प्रक्रियाओं एवं हीरा की नियमित समीक्षा को प्रक्रिया सुरक्षा की आधारशिला बताया।

कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन महाप्रबंधक सुरेश सिंह द्वारा प्रस्तुत किया गया। दिनभर चले इस कार्यशाला में कार्यस्थल सुरक्षा से संबंधित विधिक प्रावधान, सुरक्षा नीति एवं योजना, जोखिम पहचान एवं विश्लेषण, व्यवहार-आधारित सुरक्षा, श्रेष्ठ सुरक्षा प्रथाएँ तथा सुरक्षा पेशेवरों की बदलती भूमिका जैसे विषयों पर विस्तृत तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। प्रत्येक सत्र को व्यावहारिक उदाहरणों एवं केस स्टडी के माध्यम से समृद्ध किया गया, जिससे प्रतिभागियों को गहन एवं उपयोगी ज्ञान प्राप्त हुआ।

तेंदुवा धाम में श्रीराम कथा का भव्य शुभारंभ : मुख्यमंत्री साय ने लिया संतों का आशीर्वाद

छत्तीसगढ़ 'धान का कटोरा' होने के साथ-साथ सेवा, समर्पण और आस्था की भूमि - मुख्यमंत्री

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जांजगीर-चांपा जिले के शिवरीनारायण स्थित राम मिलेंगे आश्रम, तेंदुवा धाम कुरियारी में आयोजित 9 दिवसीय श्रीराम कथा में शामिल हुए। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या साय के साथ आश्रम पहुंचकर विधिवत पूजा-अचर्ना की तथा प्रदेशवासियों की सुख, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। इस दौरान उन्होंने पद्म विभूषण से सम्मानित जगद्गुरु रामभद्राचार्य महाराज से आशीर्वाद प्राप्त किया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने अपने संबोधन में कहा कि छत्तीसगढ़ की पावन भूमि सदैव भगवान श्रीराम के चरणों से धन्य रही है। उन्होंने वनवास काल में भगवान श्रीराम के आगमन और माता शबरी की अद्भुत भक्ति का उल्लेख करते हुए कहा कि इस धरती ने आस्था, समर्पण और विश्वास की अनूठी परंपरा को सहेज कर रखा है। उन्होंने कहा कि तेंदुवाधाम आज धार्मिक और सांस्कृतिक जागरण का प्रमुख केंद्र बनता जा रहा है, जहां हजारों श्रद्धालु एक साथ श्रीराम कथा का श्रवण कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर को अत्यंत सौभाग्यशाली बताते हुए कहा कि एक ही मंच से अनेक संतों का सान्निध्य और आशीर्वाद प्राप्त होना विशेष अनुभव है। उन्होंने आश्रम परिसर में हरिवंश औषधालय एवं पंचकर्म केंद्र, श्रीराम-जानकी मंडपम, हरिवंश वैदिक पाठशाला, मां दुर्गा गौ मंदिर और हनुमत प्रवेश द्वार सहित विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों के लोकार्पण पर आश्रम प्रबंधन और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ धान का कटोरा होने के साथ-साथ सेवा, समर्पण और आस्था की भूमि भी है। उन्होंने अयोध्या में भगवान श्रीराम मंदिर निर्माण के दौरान छत्तीसगढ़ से 11 ट्रक चावल और चिकित्सकों की टीम के वहां पहुंचने का उल्लेख करते हुए इसे प्रदेशवासियों की गहरी श्रद्धा का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि लगभग 500 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद भगवान श्रीराम भव्य मंदिर में विराजमान हुए हैं, जो देश की सांस्कृतिक एकता और गौरव का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि श्रीरामलला दर्शन योजना के माध्यम से हजारों श्रद्धालु अयोध्या धाम के दर्शन कर लाभान्वित हो रहे हैं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन और जवानों के अदम्य साहस से आज प्रदेश से नक्सलवाद समाप्त हो चुका है तथा राज्य में शांति, विकास और सामाजिक समरसता को सवोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया यहां की संस्कृति और जीवन मूल्यों की सच्ची पहचान है। इस अवसर पर परमपूज्य वासुदेवनंद सरस्वती महाराज, किन्नर अखाड़ा प्रमुख मां टीना सहित अनेक संत-महात्माओं की गरिमामयी उपस्थिति में विभिन्न धार्मिक-सांस्कृतिक परियोजनाओं का लोकार्पण किया गया।

राघव सेवा समिति के प्रमुख डॉ. अशोक हरिवंश ने बताया कि यह स्थल माता शबरी की जन्मभूमि शिवरीनारायण में स्थित है, जहां कलिंग शैली में भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण किया जा रहा है। आश्रम में औषधालय, वैदिक विद्यालय, गौ मंदिर, पंचमुखी हनुमान मंदिर, गीता वाटिका, शबरी रसोई और निर्धन कन्या विवाह जैसी अनेक सामाजिक-धार्मिक पहल संचालित हो रही हैं। कार्यक्रम के तहत विभिन्न वर्गों - दिव्यांगजन, रक्तदाता, कुष्ठ रोगी और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों - को समर्पित विशेष दिवस भी आयोजित किए जा रहे हैं। कार्यक्रम में सांसद श्रीमती कमलेश जांगड़े, महंत रामसुंदर दास सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

खास खबर

राज्यपाल डेका से प्रशिक्षणरत नायब तहसीलदारों ने की मुलाकात

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

राज्यपाल रमेन डेका से लोकभवन में छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग से चयनित होकर विभिन्न जिलों में सेवा दे रहे नायब तहसीलदारों ने सौजन्य भेंट की। ये सभी वतर्मान में राज्य प्रशासनिक अकादमी निमोरा में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। राज्यपाल डेका ने नायब तहसीलदारों को संबोधित करते हुए कहा कि उन्हें जीवन में जनसेवा का महत्वपूर्ण अवसर मिला है। यहां तक पहुंचने के लिए सभी ने कठिन परिश्रम किया है, इसलिए अब पूरी निष्ठा और ईमानदारी से अपने दायित्व निभाने होंगे।

उन्होंने कहा कि शासकीय सेवा में संवेदनशीलता सबसे महत्वपूर्ण गुण है। आम जनता अपनी समस्याओं के समाधान की अपेक्षा लेकर प्रशासन के पास आती है। ऐसे में हर व्यक्ति की समस्या को गंभीरता से सुनना और उसके निराकरण के लिए हरसंभव प्रयास करना अधिकारियों का कर्तव्य है। राज्यपाल ने कहा कि सभी समस्याओं का समाधान तुरंत संभव नहीं होता, लेकिन सकारात्मक सोच और ईमानदार प्रयास हमेशा होना चाहिए। उन्हें जो अधिकार मिले हैं, उनका सदुपयोग जनता के हित में करें। उन्होंने प्रेरक संदेश देते हुए कहा कि जीवन में ऐसा कार्य अवश्य करें, जो केवल लेने का नहीं बल्कि समाज को कुछ देने का उदाहरण बने। इस अवसर पर उप संचालक, राज्य प्रशासनिक अकादमी निमोरा श्रीमती पावर्ती पटेल उपस्थित थीं।

विश्व रेडक्रॉस दिवस पर राज्य भर में होंगे विशेष कार्यक्रम, राज्यपाल डेका ने दिए निर्देश

रायपुर। राज्यपाल रमेन डेका ने कहा कि रेडक्रॉस के मानव सेवा कार्यों का प्रचार-प्रसार जन-जन तक पहुंचाने के लिए सदस्यता अभियान को गति देना आवश्यक है। इसके लिए जनप्रतिनिधियों, समाज सेवियों एवं विभिन्न वर्गों के गणमान्य नागरिकों को अभियान से जोड़ा जाए। श्री डेका ने 8 मई विश्व रेडक्रॉस दिवस के अवसर पर राज्य एवं जिला शाखाओं में वृहद स्तर पर कार्यक्रम आयोजित करने के निर्देश दिए। राज्यपाल रमेन डेका से लोकभवन में छत्तीसगढ़ रेडक्रॉस सोसायटी के अध्यक्ष टोमन साहू ने मुलाकात की। इस दौरान रेडक्रॉस सोसायटी की गतिविधियों, सदस्यता अभियान तथा आगामीविश्व रेडक्रॉस दिवस के आयोजन के संबंध में राज्यपाल द्वारा मार्गदर्शन दिया गया।

श्री डेका ने 8 मई विश्व रेडक्रॉस दिवस के अवसर पर वृहद स्तर पर कार्यक्रम आयोजित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आम नागरिकों और गणमान्य व्यक्तियों को रेडक्रॉस स्टीकर लगाकर दान संग्रहण कार्यक्रम चलाएं। उन्होंने प्रदेश के सभी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं को जूनियर रेडक्रॉस और यूथ रेडक्रॉस से जोड़ने के निर्देश दिए। राज्यपाल ने कहा कि युवाओं की भागीदारी से सेवा, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को बढ़ावा मिलेगा। बैठक में रेडक्रॉस सोसायटी के विभिन्न कार्यक्रमों और भविष्य की योजना पर भी चर्चा की गई। इस अवसर पर रेडक्रॉस सोसायटी के राज्यप्रतिनिधि युवराज देशमुख और कोषाध्यक्ष संजय पटेल उपस्थित थे।

आधारभूत सुविधाओं के विस्तार से बदलेगा लखनपुर नगर पंचायत का स्वरूप-अग्रवाल

कैबिनेट मंत्री राजेश अग्रवाल ने 283 लाख रूपए के विकास परियोजनाओं का किया भूमिपूजन

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल ने कहा कि लखनपुर का सर्वांगीण विकास सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल है और इन परियोजनाओं के माध्यम से नगर की आधारभूत संरचना को और अधिक सुदृढ़ बनाया जाएगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इन कार्यों के पूर्ण होने से नागरिकों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी और क्षेत्र के समग्र विकास को नई गति प्राप्त होगी। नगर पंचायत लखनपुर में विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए 283 लाख रूपए की लागत से पूर्ण होने वाली विभिन्न विकास परियोजनाओं का विधिवत भूमिपूजन पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल द्वारा किया गया।

मंत्री श्री अग्रवाल ने कहा कि आधारभूत सुविधाओं के विस्तार और सुदृढ़ीकरण से छत्तीसगढ़ के लखनपुर नगर पंचायत का स्वरूप तेजी से बदलने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि भूमिपूजन की गई परियोजनाओं में सड़क, नाली, सामुदायिक अधोसंरचना सहित विभिन्न आवश्यक विकास कार्य शामिल हैं, जो न केवल नगर की मूलभूत जरूरतों को पूरा करेंगे बल्कि आने वाले समय में आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति का आधार भी बनेंगे। इन योजनाओं के क्रियान्वयन से लखनपुर का स्वरूप आधुनिक और सुव्यवस्थित नगर के रूप में उभरकर सामने आएगा।

मंत्री श्री अग्रवाल ने नगर पंचायत लखनपुर के समस्त नागरिकों को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सरकार जनहित के कार्यों के प्रति पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है और भविष्य में भी विकास की यह गति लगातार जारी रहेगी। इस अवसर पर क्षेत्रवासियों ने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय एवं उपमुख्यमंत्री अरुण साव के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार के सतत प्रयासों से ही लखनपुर को यह महत्वपूर्ण सौगात प्राप्त हुई है। स्थानीय नागरिकों में विकास कार्यों को लेकर उत्साह का माहौल है और उन्होंने आशा जताई कि इसी तरह क्षेत्र में निरंतर विकास कार्य होते रहेंगे। इस अवसर पर क्षेत्र के जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

समर्थन मूल्य चना खरीदी ने पकड़ी रफ्तार

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान 2018 में शुरू की गई एक प्रमुख सरकारी योजना है। इसका उद्देश्य दलहन, तिलहन किसानों को उनकी उपज का लाभकारी न्यूनतम समर्थन मूल्य सुनिश्चित करना है। यह योजना मूल्य अस्थिरता को कम कर किसानों की आय की रक्षा करती है। प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान के तहत छत्तीसगढ के धमतरी जिले में चना खरीदी का कार्य अब अपने अंतिम और निर्णायक चरण की ओर बढ़ रहा है। राज्य में सर्वाधिक चना उत्पादक जिले के रूप में अपनी धाक जमा चुके धमतरी में, अब उपार्जन केंद्रों पर किसानों की चहल-पहल और भी बढ़ गई है।

जिले की 76 हजार क्विंटल की शानदार उपलब्धि के बाद, कृषि विभाग अब शेष 24 हजार क्विंटल के लक्ष्य को पूरा करने के लिए मिशन मोड पर है। राज्य स्तरीय कृषि अधिकारियों का मानना है कि धमतरी जिले द्वारा अपनाई गई पारदर्शी पंजीकरण और त्वरित भुगतान की प्रणाली अन्य जिलों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनी है। प्रशासन की सक्रियता से किसानों को प्राथमिकता मिल रही है। जिले के 11 खरीदी केंद्रों पर बढ़ती भीड़ को देखते हुए जिला प्रशासन पूरी तरह सक्रिय है।

कलेक्टर ने उपार्जन केंद्रों पर नोडल अधिकारियों की तैनाती बढ़ा दी है, ताकि तौल से लेकर भुगतान तक की प्रक्रिया में कहीं कोई बाधा न आए। इसके साथ ही उन्होंने परिवहन में तेजी लाने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए हैं। खरीदी गई उपज को जल्द से जल्द गोदामों तक पहुँचाने के लिए परिवहन की अतिरिक्त व्यवस्था की गई है, जिससे केंद्रों पर किसानों को अपनी बारी का इंतजार न करना पड़े। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि उपज लेकर आने वाले किसी भी किसान को निराश होकर न लौटना पड़े।

उपार्जन केंद्रों पर मौजूद किसानों का कहना है कि समर्थन मूल्य पर त्वरित भुगतान मिलने से उन्हें रबी की कटाई के बाद के खर्चों को संभालने में बहुत मदद मिल रही है। समय पर मिल रहे इस आर्थिक संबल के कारण किसानों का रुझान अब अन्य फसलों की तुलना में दलहन उत्पादन की ओर अधिक बढ़ रहा है। यह योजना न केवल किसानों को सही दाम दिलाती है, बल्कि उपभोक्ताओं के लिए आवश्यक वस्तुओं की कीमतों को भी नियंत्रित करती है। जिला प्रशासन ने स्पष्ट कर दिया है कि अगले कुछ दिनों में शेष लक्ष्य को हासिल करने के लिए सभी संसाधन झोंक दिए जाएंगे। प्रशासनिक स्तर पर किसानों को सलाह दी गई है कि वे अपने संबंधित उपार्जन केंद्रों के नोडल अधिकारियों से संपर्क बनाए रखें ताकि खरीदी प्रक्रिया सुगमता से संपन्न हो सके।

दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को भी मिलेगी बेहतर सुविधाएं : मंत्री केदार कश्यप

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि राज्य सरकार योजनाओं को धरातल पर उतारकर लोगों के जीवन में वास्तविक बदलाव ला रही है। उन्होंने बताया कि इन कार्यों से क्षेत्र में बुनियादी सुविधाएं मजबूत होंगी और ग्रामीणों को सीधा लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि सड़क, शिक्षा, डिजिटल सेवाएं और सामुदायिक सुविधाओं के विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, ताकि मिल सकें। हमारी सरकार सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास के मूल मंत्र के साथ कार्य कर रही है।

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार गांव, गरीब और अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचाने के संकल्प को निरंतर साकार कर रही है। इसी कड़ी में वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री केदार कश्यप ने नारायणपुर विधानसभा क्षेत्र के सिवनी में लगभग एक करोड़ 55 लाख रुपए के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया। लोकार्पित कार्यक्रम के तहत सिवनी से खालेपारा तक 0.55 किमी सड़क (73.30 लाख रुपए) तथा सिवनी से आमागुड़ापारा तक 0.55 किमी सड़क (55.18 लाख रुपए) का निर्माण किया गया। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आवागमन सुगम होगा और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। ग्राम बड़ेआमाबाल एवं बड़ेअलनार में अटल डिजिटल सुविधा केंद्र स्थापित किए गए हैं, जिससे ग्रामीणों को ऑनलाइन सेवाएं और शासकीय योजनाओं का लाभ गांव में ही मिल सकेगा। शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सोनारपाल में प्रार्थना शेड का निर्माण भी किया गया है, जिससे विद्यार्थियों को बेहतर शैक्षणिक वातावरण मिलेगा।

सोनारपाल में गणेश मंडली के पास शेड, टाइल्स एवं लाइट सहित निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया गया। इसके साथ ही ग्राम बड़ेआमाबाल के खरियापारा में सांस्कृतिक भवन निर्माण कार्य का भी भूमिपूजन किया गया, जो ग्रामीणों के सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजनों का केंद्र बनेगा। वन मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि इन विकास कार्यों से न केवल बुनियादी सुविधाएं मजबूत होंगी, बल्कि रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे और लोगों का जीवन स्तर बेहतर होगा। उन्होंने बताया कि बस्तर क्षेत्र के समग्र विकास के लिए सरकार विशेष प्राथमिकता के साथ कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि सरकार पारदशिर्ता, गुणवत्ता और समयबद्धता के साथ विकास कार्यों को पूरा कर रही है। आने वाले समय में भी नारायणपुर जिले में ऐसे जनहितकारी कार्य जारी रहेंगे, जिससे हर गांव, हर घर और हर परिवार सशक्त एवं आत्मनिर्भर बन सके।

हाथ करघे से कमाई तक- ग्राम नारी की महिलाओं की सफलता का राज

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

ग्रामोदय बुनकर सहकारी समिति ने अपने सामूहिक प्रयास, मेहनत और दूरदृष्टि के बल पर ऐसी सफलता की कहानी रची है, जो न केवल आर्थिक उन्नति का प्रतीक है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि ग्रामीण महिलाएँ यदि अवसर और सहयोग प्राप्त करें, तो वे किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल कर सकती हैं। धमतरी जिले के छोटे से ग्राम नारी में आज आत्मनिर्भरता, परंपरा और नवाचार का एक अद्भुत संगम देखने को मिलता है। कभी सीमित संसाधनों और अवसरों वाला यह गाँव अब ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण की प्रेरणादायक मिसाल बन चुकी है।

परंपरा से जुड़ी नई शुरुआत

नारी गाँव में पहले बुनाई प्रमुख आजीविका नहीं थी, लेकिन पड़ोसी राज्य ओडिशा में संबलपुरी साड़ियों की बढ़ती मांग को देखते हुए समिति ने इस क्षेत्र में कदम रखा। संबलपुरी साड़ियाँ अपनी विशेष इकत डिजाइन और आकर्षक रंगों के लिए जानी जाती हैं, जिन्हें बनाने के लिए उच्च कौशल और धैर्य की आवश्यकता होती है।

सरकार का मजबूत सहयोग

छत्तीसगढ़ शासन द्वारा समिति को आत्मनिर्भर बनाने के लिए शासकीय वस्त्र उत्पादन कार्यक्रम अंतर्गत नियमित रूप से धागा प्रदाय किया जा रहा है, जिससे बुनकरों को नियमित रोजगार तथा समितियों को सुचारु संचालन हेतु सेवा प्रभार के रूप मे आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। साथ ही नवीन बुनाई प्रशिक्षण तथा बुनकरों को नवीन करघे वितरण से उत्पादन क्षमता बढ़ी है। इस सहयोग से समिति आर्थिक रूप से सशक्त हुई है तथा बाजार मांग के अनुरूप वस्त्र तैयार करने मे सक्षम हुई है।

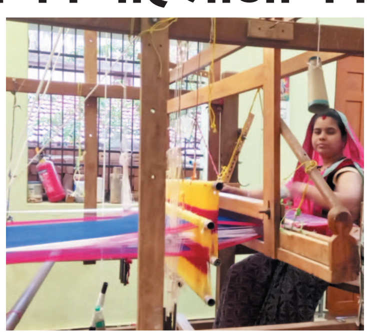

बढ़ता बाजार और आय

आज ग्रामोदय बुनकर सहकारी समिति ग्राम नारी द्वारा तैयार की गई साड़ियों की बिक्री मुख्य रूप से ओडिशा के बाजारों में होती है। वर्तमान मे समिति द्वारा माह मे 300-400 साड़ियों का उत्पादन किया जा रहा है, जिससे समिति का मासिक कारोबार लगभग 3 से 4 लाख रुपये तक पहुँच चुका है, जो ग्रामीण स्तर पर एक बड़ी उपलब्धि है।

महिलाओं का सशक्तिकरण

इस पहल ने न केवल आय के स्रोत को बढ़ाया है बल्कि, महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता दी है तथा सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित की है। जो महिलाएँ पहले इस कार्य से अनभिज्ञ थीं, वे आज कुशल बुनकर बन चुकी हैं और आत्मविश्वास के साथ उत्पादन में योगदान दे रही हैं। पूर्व मे शासकीय वस्त्र उत्पादन से जो महिलाएं प्रतिदिन 300-350 रुपये कमाती थी, वे आज 550-600 रुपये काम रही है। भविष्य मे अतिरिक्त कौशल उन्नयन प्रशिक्षण तथा दक्षता से वे 1000-1200 रुपये प्रतिदिन कमाने मे सक्षम हो सकेंगी।

भविष्य की दिशा

ग्राम नारी की यह सहकारी समिति आज आत्मनिर्भरता की ओर मजबूती से बढ़ रही है। यदि इसे आगे ब्रांडिंग, डिजिटल मार्केटिंग और नए बाजारों तक पहुँच का समर्थन मिले, तो यह और भी बड़े स्तर पर अपनी पहचान बना सकती है। यह कहानी दर्शाती है कि जब सरकारी सहयोग और समुदाय की मेहनत साथ आती है, तो छोटे गाँव भी सफलता की बड़ी मिसाल बन सकते हैं।

संपादकीय

अपनी नाकामी छिपानी है दूसरे की नाकामी गिनाओ

राजनीति में ऐसा अक्सर राजनीतिक दल करते हैं उनको किसी राज्य में अपनी नाकामी छिपानी होती है तो वह उस राज्य के दूसरे सत्तारूढ़ दल की नाकामी गिनाते रहते हैं। जब भी किसी राजनीतिक दल का नेता दूसरे दलों की नाकामी गिनाते रहता है तो जनता समझ जाती है कि यह नेता खुद तो अपनी पार्टी के लिए कुछ कर नहीं पाया है, उसकी अपनी पार्टी राज्य में कमजोर हो गई है और वह दूसरे दलों की कमजोरी का खुलासा कर रहा है कि देखो इस राजनीतिक दल की यह कमजोरी है। यह खामी है। जो राजनीतिक दल किसी राज्य में मजबूत होता है तो वह जनता को दूसरे दलों की कमी या खामी नहीं बताता है वह यह बताता है कि उनकी सरकार के समय राज्य का क्या हाल था और उनकी सरकार फिर से राज्य में बनेगी तो राज्य में क्या बदलाव आने वाला है।

कांग्रेस के सबसे बड़े नेता राहुल गांधी ऐसे ही नेता हैं। उनके नेतृत्व में पं.बंगाल में कांग्रेस साल दर साल कमजोर होती गई है।पं.बंगाल में कांग्रेस को मजबूत करना उनकी जिम्मेदारी थी। कांग्रेस को वह मजबूत नहीं कर सके हैं। यह उनकी नाकामी है। पं. बंगाल में कांग्रेस के कमजोर होने के कारण आज स्थिति यह है कि वाम दल तक उसके साथ सीटों का तालमेल कर चुनाव नहीं लड़ रहे हैं। उनको मालूम है कि कांग्रेस के साथ चुनाव लड़ने का मतलब है कि चुनाव में नुकसान होना और ऐसा उनको अनुभव पिछले चुनाव में हो चुका है। पिछला चुनाव कांग्रेस और वाम दलों ने मिलकर लड़ा था लेकिन इससे दोनों को कोई फायदा नहीं हुआ है। वामदलों को लगा कि उनको नुकसान हुआ है यही वजह है कि इस बार वामदलों ने कांग्रेस के साथ मिलकर चुनाव लड़ने से मना कर दिया। यह पं. बंगाल में कांग्रेस की वास्तविक स्थिति है। इस स्थिति को छिपाने के लिए वह यहां चुनावी सभा में कहते हैं कि ममता और मोदी में कोई फर्क नहीं है। जैसे मोदी हैं वैसी ममता है। दोनों मिले हुए हैं।

पं. बंगाल में आज भाजपा मजबूत स्थिति में है तो राहुल गांधी इसका ऐसा विश्लेषण करते हैं कि लोगों को यकीन नहीं हो सकता कि वाकई में ऐसा पं.बंगाल में हुआ है। वह कहते हैं कि ममता ने पं. बंगाल में विभाजनकारी राजनीति की इससे भाजपा को यहां मजबूत होने का मौका मिला है। यानी आज यहां भाजपा मजबूत है और टीएमसी की विकल्प है तो उसके लिए ममता दोषी है। जब राहुल गांधी ऐसा कहते हैं तो जनता समझ जाती है कि राहुल गांधी और उनकी कांग्रेस पं.बंगाल में ममता का विकल्प बन नहीं सकीं।दस साल पहले तो भाजपा तो पं.बंगाल में नहीं थी। तब तो कांग्रेस ही विपक्ष में थी। तब राहुल गांधी की जिम्मेदारी थी कि वह कांग्रेस को ममता का विकल्प बनाए रखते लेकिन राहुल गांधी खुद कांग्रेस को ममता का विकल्प बना नहीं सके हैं। यह उनकी नाकामी है पं. बंगाल मे भाजपा आज मजबूत है और जहां कांग्रेस को होना था वहां आज भाजपा है तो यह मोदी व शाह की मेहनत का नतीजा है।

बंगाल में दूसरे चरण के मतदान के पहले कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने हुगली के सेरामपुर में एक रैली में कहा कि मोदी व ममता दोनों गरीबों के बजाय अमीरों की मदद करते हैं,मोदी देश में व ममता बंगाल में अमीरो के हित में काम कर रही है। दोनों सत्ता पाने की राजनीति करते हैं।राहुल गांधी खुद को ममता से बेहतर नेता बताने के लिए कहते हैं कि मेरे खिलाफ 36 केस हैं और ममता पर एक भी क्यों नहीं हैं। मुझसे 55 घंटे पूछताछ की गई, ममता से कितने घंटे पूछताछ हुई। चुनाव के दौरान भाजपा ममता पर हमला करती है, चुनाव के बाद बंद कर देती है। कहा जाता है कि राहुल गांधी पर वामपंथ का प्रभाव बढ़ गया है तो यूं ही नहीं कहा जाता है। राहुल गांधी वामपंथियों की तरह सोचने लगे हैं यही वजह है कि वह अमीर व गरीब की बात करने लगे हैं। वामपंथियों की सारी राजनीति अमीरों का विरोध करने और गरीबों को गरीबी नाम पर ठगने की रही है।यह राजनीति पुरानी हो गई है और जनता इस पर यकीन नहीं करती है। वह उसे गरीबों का नेता नहीं मानती है जो गरीबों की खाली बात करता है और अमीरों के विरोध का खाली दिखावा करता है।

कांग्रेस एक समय में गरीबी दूर करने की बात करके गरीबों की पार्टी बनी हुई थी। धीरे धीरे गरीबों को समझ आ गया कि गरीबी की बात करने वाला उनकी गरीबी दूर नहीं सकता। गरीबी की बात करने के कारण ही उसकी गरीबी बनी हुई है। उसके घर में जरूरी सुविधाएं नहीं है। पीएम मोदी के आने के बाद ही गरीबों को वह सब सुविधाएं मिली हैं जिसका वह सपना देखा करते थे। आज गरीबों को पास अपना घर, बिजली, पानी, शौचालय, मुफ्त इलाज,गैस, सस्ता राशन की सुविधा है तो पीएम मोदी के कारण है और मोदी ने कभी नही कहा कि वह गरीबी दूर करेंगे और पीएम मोदी बिना गरीबी दूर करने का वादा किए गरीबी को दूर किया है। गरीबों का इसका एहसास होता है यही वजह है राहुल गांधी कितना भी गरीबी व गरीबों की बात कर लें। मोदी को अमीरों का मित्र बताएं जनता को मोदी पर भरोसा है तो इसलिए है कि पीएम मोदी उनके लिए कहा कम है किया ज्यादा है। देश के गरीब लोग अब अच्छे जान गए हैं, उनके लिए काम करने वाला कौन है उनके लिए हवा हवाई बाते करने वाले कौन हैं। यही वजह है कि चुनाव में देश की गरीब जनता काम करने वाले राजनीतिक दल व नेता को चुनती है।

मुफ्त की राजनीति से अकर्मण्य होती पीढ़ी

के. शर्मा

किसी जमाने में ह्यअजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम, दास मलूका कह गए सबके दाता रामह्ल को उन लोगों को निंदा के रूप में सुनाया जाता था, जो कुछ नहीं करना चाहते थे, लेकिन अब तो लगता है कि सरकारें ही इसके लिए प्रोत्साहित कर रही हैं। पिछले दिनों तमिलनाडु, केरल, असम, पुडुचेरी तथा पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनावों को लेकर खासी गहमागहमी रही। बाकी राज्यों में चुनाव संपन्न हो चुके हैं और पश्चिम बंगाल में अब दूसरे चरण का मतदान बाकी है। हर दल अपनी-अपनी जीत के लिए उत्साहित है। बड़ी-बड़ी घोषणाएं भी की जाती रही हैं कि अगर हम चुनाव में जीते, तो महिलाओं के खाते में हर माह, या हर साल इतने हजार ट्रांसफर करेंगे। युवाओं को इतना पैसा देंगे। किसानों का बिजली का बिल माफ कर देंगे। ये देंगे, वो देंगे।

यानी कि मुफ्त की रेवड़ियों का बाजार लगा रहा है। इस हाथ वोट दो, उस हाथ ये लो। यानी कि वोट की कीमत कैश या काइंड में मापी जा रही है। सत्तर के दशक में महिलाओं-पुरुषों को साड़ियां, धोतियां बांटकर, ट्रांजिस्टर देकर, वोट देने से पहले की रात नकदी देकर काम चला लिया जाता था, लेकिन अब हजारों रुपये भी कम पड़ जाते हैं। इस दल ने हमें यह दिया है, दूसरा दल अगर उससे ज्यादा दे रहा है, तो बस वोट उसी को। फिर मान लीजिए पिछले इलेक्शन में अगर इतना रुपया मिला था, इस बार भी उतने का ही वादा हो, तो क्या खास दिया। ज्यादा दो, तो कुछ बात बने। इस लालच को बढ़ाने में अधिकांश राजनीतिक दल बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। वे जानते हैं कि लोकतांत्रिक प्रतिबद्धता आदि का कोई मतलब नहीं, लोगों को असली मतलब इस बात से होता है कि सरकार उन्हें मुफ्त में क्या दे रही है।

याद है हमें कि नब्बे के दशक में सोवियत संघ के विघटन के बाद, जब पूर्वी यूरोप के समाजवादी गुट में शामिल देश एक-एक करके टूट रहे थे, तो मशहूर मीडिया पसर्नेलिटी प्रणय राय ने एक कार्यक्रम में कहा था कि नाउ देअर विल बी नो फ्री लंच। यानी कि अब मुफ्त में कुछ नहीं मिलेगा। इन देशों के गिरने के पीछे यही कारण बताया जाता था कि यहां की आर्थिक स्थिति को वहां की सरकारों ने ही लोगों में मुफ्त सब कुछ पाने की आदत डालकर, तबाह कर दिया था। इसलिए वे समाजवादी होते हुए भी पूंजीवाद के सामने एक-एक करके धराशायी हो गए। हमारे यहां जितने भी राजनीतिक दल हैं, उन सबने इन स्थितियों को देखा है। बैठकर खाने के मुकाबले परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है, ये भी जानते ही हैं।

यों भी दुनिया में कुछ मुफ्त नहीं मिलता। हो सकता है जिसे दलों द्वारा मुफ्त में सब कुछ मिल रहा है, वह उसकी कीमत न चुका रहा हो, लेकिन कीमत तो चुकानी ही पड़ती है, चाहे तरह-तरह के कर देकर देश की जनता चुकाए या सरकारें विश्व बैंक या अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के सामने कटोरा लेकर चले जाएं। मगर विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के ऋण भी ब्याज समेत चुकाने ही पड़ते हैं, इन संस्थाओं की कठोर शर्तें भी माननी पड़ती हैं। वे भी देश की जनता के ही सिर होते हैं।

दरअसल, कोई भी सरकार तो कुछ कमाती नहीं है। वह तो लोगों से ही वसूलती है। यह बात अलग है कि अपने देश में जो टैक्स देते हैं, सरकारों की नजर में वे सोने की अंडे देने वाली मुर्गियां होती हैं। जितना चाहो निचोड़ो। आम तौर पर ये लोग मध्यवर्ग के होते हैं क्योंकि अमीर लोग तो सारी सुख, सुविधाओं, लाखों-करोड़ के मालिक होने के बावजूद, बेचारे अपना ऋण नहीं चुका पाते और सरकारें उन पर रहम करके माफ कर देती हैं। लेकिन मध्यवर्ग करदाता के लिए शायद ही किसी दल के पास कोई योजना हो। ये लोग अपनी मेहनत से पढ़-लिखकर नौकरियां प्राप्त करते हैं, ऋण लेकर घर बनाते हैं, शादी-ब्याह अपने खर्चे से करते हैं। बच्चों को पढ़ाते हैं लेकिन कोई इनकी सुध नहीं लेता, क्योंकि मान लिया गया है कि यह तो सम्पन्न वर्ग है। इसे किसी सरकारी सहायता की जरूरत नहीं। इसकी जेबों से पैसा निकालकर सरकारें वोट बटोरने के लिए लोकप्रियतावादी, जिसे अंग्रेजी में पॉपुलिज्म कहते हैं, का रास्ता अपनाती हैं। वोटर्स के लिए तरह-तरह की ऐसी मुफ्त की योजनाएं लाई जाती हैं, जिनसे सरकारी खजाना खाली होता जाता है। राज्य सरकारों से लेकर केंद्र सरकार तक मुफ्त की रेवड़ियां बांटने से परहेज नहीं करतीं।

हालात यहां तक पहुंच गए हैं कि बहुत सारी राज्य सरकारों के खजाने खाली हैं। उन पर लाखों करोड़ का कर्ज है, कमर्चारियों को वेतन देने के पैसे नहीं हैं जैसा कि कुछ दिन पहले हमने हिमाचल प्रदेश में देखा था, लेकिन वोटर भगवान वोट दे दे, इसके लिए खजाना खाली होता रहे, तो क्या हुआ। लोग कहते हैं कि दलों का वश नहीं चलता वर्ना वे वोटर्स को सूरज, चांद और आसमान को भी मुफ्त में बांट दें।

पिछले साल बिहार के चुनाव से पहले अड़तीस हजार करोड़ रुपये खर्च किए गए थे। हालत यह हो गई थी कि वहां की सरकार के पास जरूरी खर्चों के लिए भी पैसे नहीं बचे थे। एक अनुमान के अनुसार विभिन्न सरकारों द्वारा महिलाओं के लिए जो मुफ्त की योजनाएं चलाई जा रही हैं, उनकी राशि एक लाख, अड़सठ हजार, चालीस करोड़ तक पहुंच सकती है। किसी जमाने में ह्यअजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम, दास मलूका कह गए सबके दाता रामह्ल को उन लोगों को निंदा के रूप में सुनाया जाता था, जो कुछ नहीं करना चाहते थे, लेकिन अब तो लगता है कि सरकारें ही इसके लिए प्रोत्साहित कर रही हैं।

केंद्र सरकार ने चाहे इस पर चिंता व्यक्त की हो, लेकिन सिर्फ चिंता से कुछ नहीं होता, क्योंकि दलों को चुनाव जीतने का यही आसान सा रास्ता लगता है। ऐसे में देश में कुछ न हो, इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास में धन के अभाव में रोड़े अटक जाएं, किसी को क्या फर्क पड़ता है। सच तो यह है कि इन मुफ्त की रेवड़ियों की कीमत अंततः जनता को ही चुकानी पड़ती है। उच्चतम न्यायालय बार-बार इस बारे में अपनी अप्रसन्नता प्रकट कर चुका है, मगर ह्यस्वारथ-लागि करें सब प्रीतीह्ल के इस दौर में न नेता सुनते हैं, न जनता। नेताओं का स्वार्थ वोट और जनता का स्वार्थ मुफ्त में सब कुछ।

अपने देश में बताया जाता है कि अस्सी करोड़ लोगों को मुफ्त में वर्षों से राशन मुफ्त दिया जा रहा है। इसका नतीजा यह है कि अब गांवों में भी लोग काम नहीं करना चाहते। गांव में रहने वाले एक मित्र ने बताया था कि चूंकि तरह-तरह की सरकारी योजनाओं से लोगों को बिना कुछ किए पैसे भी मिल रहे हैं और खाने-पीने की सुविधाएं, तो अब युवा काम नहीं करना चाहते। वे दिनभर मटरगश्ती करते हैं। बहुत से जुआ आदि खेलते हैं। चूंकि काम नहीं तो खाली दिमाग शैतान का घर, इसलिए लड़ाई-झगड़ा, हत्या यानी कि अपराधों का ग्राफ भी बढ़ रहा है। गांव में अब मजदूर भी नहीं मिलते।

एक तरह से ऐसी पीढ़ी तैयार हो रही है जिसके मुंह मुफ्त की रेवड़ियों का स्वाद लग चुका है। फिर यदि एक बार आप किसी को मुफ्त की सुविधा का स्वाद चखा दें, तो फिर उसे आसानी से वापस नहीं लिया जा सकता। वापस लेते ही हारने की तैयारी हो जाती है। इसीलिए बहुत से नेता निजी बातचीत में इन मुफ्त की सुविधाओं से असहमति व्यक्त करते हैं, मगर खुलेआम अगर कुछ कहें तो जानते हैं कि उनका राजनीतिक भविष्य चौपट हो जाएगा।

संग्रहालय में तब्दील होते पुस्तकालय..!

डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा

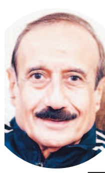

छत्तीसगढ़ के एक महाविद्यालय में विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर अपने ही महाविद्यालय के विद्यार्थियों को महाविद्यालय के ही पुस्तकालय का भ्रमण करवाया गया। विद्यार्थियों को रैक में रखी किताबों को दिखलाया गया, कुछ विद्यार्थियों ने पुस्तकें और पत्र पत्रिकाएं को अपने हाथों में लेकर देखा, पलटाया।

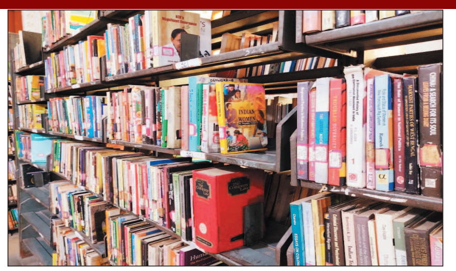

यहां कुछ सवाल खड़े होते हैं; एक तो यह कि विद्यार्थियों में न पुस्तकों के प्रति रुचि है और न ही पुस्तकालय के प्रति। साल भर के सत्र के बीत जाने के बाद में विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर यदि वे पुस्तकालय का भ्रमण कर रहे हैं तो यह सोचा जा सकता है कि इसके पहले पुस्तकालय का वे कितना उपयोग़ वे कर रहे या कर पा रहे होंगे? दूसरा, महाविद्यालयों में अब पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की संस्कृति भी खत्म-सी होती जा रही है। न पाठक आते हैं और न ही पाठकों के लिए माकूल व्यवस्थाएं पुस्तकालय में होती है। निजी महाविद्यालयों में स्थिति थोड़ी बेहतर होती है किंतु गिनती के महाविद्यालय को छोड़कर सभी सरकारी महाविद्यालयों में पुस्तकालय अलमारी और रैंक्स में ही बंद या नजरबंद है।

अधिकतर महाविद्यालयों में लाइब्रेरियन ही नहीं है, प्राध्यापक को अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। बच्चों के लिए बैठने की व्यवस्था का अभाव और पुस्तकालय से पुस्तकों का नियमित नियतकालिक लेनझ्रदेन का खंडित तरीके से होना, पुस्तकालय के प्रति विद्यार्थियों में अरुचि उत्पन्न करता है। दो दशकों से परीक्षा की तैयारी हेतु विद्यार्थियों की कुंजियों पर बढ़ी निर्भरता उन्हें पुस्तकालय से दूर करती हैं। महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में नई किताबों व शोध पत्रिकाओं का हर वर्ष होने वाला नियमित क्रय लगभग बंद है। ऐसी स्थिति में पुस्तकालय हेतु नियमित आबंटन न होने से समृद्ध पुस्तकालयों वाले पुराने महाविद्यालयों में नई-नई पुस्तकों की खरीद न हो पा रही हैं और शोध व अन्य स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं का प्रदाय अवरुद्ध हो गया है। गत कुछ वर्षों में खुले नए सरकारी महाविद्यालयों में तो पुस्तकालय एक-दो अलमारी में ही सीमित है। न बैठने की जगह और न ही पुस्तकों के पढ़ने की उपयुक्त व्यवस्था। ऐसी स्थिति में लगता है कि जहां अच्छे पुस्तकालय रहे हैं, उन महाविद्यालय के पुस्तकालय अब एक संग्रहालय में तब्दील होते चले जा रहे हैं। जहां विद्यार्थियों को लाकर बताया जा सकेगा कि ऐसे पुस्तकालय हुआ करते थे जिसमें पुस्तक रखी जाती थी और विद्यार्थी बैठ कर पढ़ने आते थे और सप्ताह-दो सप्ताह के लिये पुस्तक अपने घर भी ले जा सकते थे।

एक समस्या यह भी है कि महाविद्यालय में नियमित विद्यार्थी अब अपनी उपस्थिति के प्रति सचेत नहीं है। महाविद्यालय जब आना ही नहीं है, न प्रयोगशाला में प्रयोग करना है और न ही पुस्तकालय में पुस्तकों के अध्ययन की सुविधा का लाभ उठाना चाहते है। इसके उलट यह भी बात सच है कि महाविद्यालय में पुस्तकालय में पुस्तकों का अभाव है, प्रयोगशालाओं में पाठ्यक्रम के अनुरूप उपकरण, रसायन आदि नहीं है, सक्षम प्राध्यापक कम हैं या नहीं है तो विद्यार्थी महाविद्यालय आकर करेंगे ही क्या?

दूसरी तरफ शहरों में जहां विद्यार्थी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं वहां पुस्तकालय कल्चर का विकास हो रहा है। निजी पुस्तकालय स्थापित हो रहे हैं जहां बड़ी संख्या में विद्यार्थी जाकर बैठकर पढ़ते हैं, पुस्तक लाते हैं, वापस करते हैं। शासन द्वारा नालंदा जैसे पुस्तकालय भी प्रदेश में शुरू हुए हैं जो बहुत ही लोकप्रिय हो रहे हैं क्योंकि वहां नई-नई पुस्तकों का व पत्र-पत्रिकाएं आदि आसानी से उपलब्ध हैं, बैठ कर घंटों पढ़ने की माकूल जगह है।

दरअसल महाविद्यालय में पुस्तकालय और वाचनालय युवाओं में पढ़ने की प्रवृत्ति अर्थात 'रीडिंग हैबिट' विकसित करने के लिए एक प्रभावी व्यवस्था होती हैं ' जिन विद्यार्थियों ने कभी अपने जीवन में पुस्तकालय का भरपूर इस्तेमाल किया है, वे अपने जीवन में ज्ञान और विचार से ज्यादा समृद्ध होते रहे हैं 'लेकिन अब महाविद्यालयों में ऐसी व्यवस्था कमजोर हो है है 'इंटरनेट के युग में तो अब पुस्तक और पुस्तकालय की प्रासंगिकता और भी कम होती चली जा रही है 'हालाँकि यह सब जानते हैं कि पुस्तकें इंटरनेट पर परोसी गई जानकारियों की तुलना में ज्यादा प्रामाणिक, ज्ञान, बोध व समझ वर्धक होती हैं।'

पानीपत से बंगाल तक सत्ता की पैंतरेबाजी में नैतिकता

ज्योति मलहोत्रा

पानीपत की पहली लड़ाई के बाद के 500 साल में देश में बहुत कुछ बदला, फिर भी बहुत कुछ पहले जैसा है। खासकर सियासत में मूल्यों का पराभव। बहरहाल, बंगाल और पंजाब काफी समय से भाजपा के निशाने पर हैं। बंगाल चुनाव में भाजपा पहले चरण की वोटिंग के बाद जीत का दावा कर रही। वहीं, ममता बनर्जी जानती हैं कि बंगाल की लड़ाई पूरे विपक्ष पर गहरा असर डालेगी। पांच सौ साल पूर्व, चंडीगढ़ से सिर्फ.161 किमी. दूर पानीपत शहर में 21 अप्रैल, 1526 को जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर ने दिल्ली सल्तनत के अंतिम व क्रूरतम सुल्तान इब्राहिम लोदी को हरा डाला और भारत में मुगल शासन की नींव रखी थी।

इसके 231 साल बाद, सुदूर बंगाल में 1757 में प्लाशी के युद्धक्षेत्र में- जिसे अंग्रेजी में प्लासी का युद्ध कहा जाता है- मिली हार के साथ बाबर द्वारा स्थापित यह मुगलिया साम्राज्य अपनी विराटता का अंश मात्र रह गया था। दिल्ली के लाल किले में बैठा आलमगीर द्वितीय नाममात्र का ही बादशाह था। दो साल बाद 1759 में सत्ता संभालने वाले उसके पुत्र, शाह आलम द्वितीय के बारे यह फारसी तंज आम था, सल्तनत-ए-शाह आलम, अज दिल्ली ता पालम अर्थात शाह आलम की सल्तनत दिल्ली से पालम तक ही बची है (वतर्मान पुरानी दिल्ली-6 से लेकर इंदिरा गांधी एयरपोर्ट के टर्मिनल-1 तक, मात्र 30 किमी. तक)।

यहां पंजाब में, जहां गर्मियों के दिन पहले ही काफी गर्म हो चुके हैं, कोयल जोर-जोर से कूक रही है और आम के पेड़ों पर आया बोर गिर चुका है, इतिहास के इस छोटे से पाठ की जरूरत शायद ही थी। पंजाब को यह सब बताने की जरूरत नहीं, उसने पिछले 500 सालों में-उससे भी पहले- हमेशा यही कुछ देखा, वह मैदानी क्षेत्र जो हमलावरों, विजेताओं, तानाशाहों, लोकतांत्रिक शासकों के लिए पसंदीदा पड़ाव रहा है।

और फिर यहां बंगाल है। भारत में कहीं भी जो कुछ भी होता है, वह उपमहाद्वीप के इस हिस्से में कई गुना ज़्यादा होकर घटित होता है। हरियाली अधिक हरी है, खासकर मॉनसून के दौरान। लाल रंग ज़्यादा सुर्ख होता है, विशेषकर पूजो के उन नौ दिनों में जब देवी अधिष्ठात्री होती है। नदियां भी अधिक लंबी हैं-कुछेक तो पंजाब की नदियों से भी, हालांकि दोनों राज्यों में ऐसी नदियां हैं जो दूसरे देशों तक बहती हैं और अन्य जातियों-धर्मो के लोगों को भी अपनी जलधारा से जीवन निर्वाह का मौका देती हैं (इसके अलावा, 1398 में, जब बाबर का पूर्वज तैमूर पंजाब को तबाह कर रहा था- बाबर द्वारा अपने सह-धर्मी सुल्तान को हराकर हिंदुस्तान जीतने से करीब एक सौ साल पहले- बंगाल के मुस्लिम पठान शासक, मसलन गयासुद्दीन आजम शाह,रामायण जैसे हिंदू महाकाव्यों का बंगाली में अनुवाद करने को प्रोत्साहन दे रहे थे, इसके अलावा उन्होंने चीन के मिंग राजवंश के साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित किए और फारसी कवि हाफिज के साथ मिलकर कविताएं लिखीं)।

बंगाल में सभी भावनाएं मिल-जुल कर एक साथ चलती हैं। गुस्सा : 1905 में प्रांत का बंटवारा। पुनः विलय : 1911 में फिर से एक होना। धोखा : मीर जाफर, सुवेंदु अधिकारी। धर्म : 1906 में मुस्लिम लीग का जन्म और 1977-2011 तक नास्तिक कम्युनिस्टों का 34 वर्षीय शासन। संस्कृति : जन-गण-मन और वंदे मातरम ?। साम्राज्य : 1757 में प्लासी में मुगलों का पतन; 1857 में बैरकपुर में, ईस्ट इंडिया कंपनी का और ब्रिटिश राज का उत्थान और पतन। बदला : डायरेक्ट एक्शन डे,1946। राजनीतिः 1947 में देश विभाजन।

चाहे आप बंगाल से प्यार करें या नफरत, किंतु आप इसे नजरअंदाज नहीं कर सकते। प्रधानमंत्री मोदी और गृह मंत्री अमित शाह, दोनों ही इस शाश्वत सत्य को अच्छी तरह समझते हैं, कि अमर्त्य सेन का ऑर्ग्युमेंटेटिव इंडियन संभवतया बंगाली ही है। इसी नाम वाली उनकी किताब की अधिकतम उद्धृत पंक्ति में सेन की दलील है कि भारत की सदियों पुरानी संवाद परंपरा इसलिए बहुत बढ़िया है क्योंकि जाति, वर्ग और शिक्षा स्तर से इतर, विचारों में भिन्नता इसे समृद्ध बनाती है।

किताब की प्रस्तावना में सेन लिखते हैं- 2004 के आम चुनावों से ठीक पहले, कोलकाता में उनके घर के बाहर एक ग्रामीण,जो मुश्किल से साक्षर व बहुत गरीब था, ने उनसे कहा : हमें चुप करा देना बहुत मुश्किल नहीं, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि हम बोल नहीं सकते।

कोई हैरानी की बात नहीं कि बंगाल-और पंजाब भी, जैसा कि बीते शुक्रवार शाम पूरी तरह साफ हो गया—काफी समय से भाजपा के निशाने पर हैं। 2021 के विपरीत, जब प्रधानमंत्री का दीदी, ओ दीदी वाला ताना बंगालियों को ज़्यादा रास नहीं आया था, इस बार भाजपा के तरकश में कहीं ज़्यादा किस्म के तीर हैं। विशेष गहन पुनरीक्षण में 27.10 लाख मतदाताओं के नाम कटने से-जिससे राज्य की मतदाता सूची में 11.63 प्रतिशत की गिरावट आई- सियासी समीकरण पूरी तरह गड़बड़ा गए। मतदान के पहले चरण के बाद भाजपा अपनी जीत का दावा कर रही है। वहीं दूसरी ओर, ममता बनर्जी भी जानती हैं कि बंगाल की यह लड़ाई न सिर्फ उनके अपने राजनीतिक कैरियर को बनाएगी या बिगाड़ेगी, बल्कि समूचे विपक्ष के भविष्य पर भी इसका गहरा असर पड़ेगा।

बंगाल में घूमना और वहां की बदलती कहानी को देखना काफी आसान है-यदि आप उत्तर प्रदेश और बिहार की तरफ से आ रहे हैं, तो बस गंगा नदी के किनारे-किनारे चलते रहिए। प्लासी से ज़्यादा दूर नहीं-जहां 1757 में मुग़ल क्षत्रप सिराज-उद-दौला के पतन की घंटी बजी थी-मुशिर्दाबाद ज़िला है। 19वीं सदी में यह क्षेत्र दुनिया के सबसे समृद्ध क्षेत्रों में एक था, और आज यह ममता और तृणमूल के निलंबित विधायक हुमायूं कबीर के बीच तनातनी का केंद्र बना है। हुमायूं कबीर ने अब अपनी अलग पार्टी बना रखी है- दोनों ही अल्पसंख्यक वोटों को अपनी ओर.खींचने की होड़ में लगे हैं; जिसका अर्थ है कि ममता का यह गढ़ अब पहले जितना सुरक्षित नहीं रहा।

आप मुशिर्दाबाद में भागीरथी नदी को एक बेड़े के सहारे पार कर सकते हैं-बताते चलें कि इस बेड़े पर न सिर्फ.लोग बल्कि एक-दो साइकिलें या स्कूटर, और साथ में कुछ मुर्गियां भी सवार होती हैं। नदी के दूसरी तरफ हजारद्वारी स्थित है-यह 1837 में नवाब हुमायूं जाह द्वारा बनवाया 900 कमरों वाला ग्रीक-शैली का अद्भुत महल है। इस महल में अकबर के शासनकाल की मशहूर किताब आईन-ए-अकबरी की सात मूल प्रतियों में से एक प्रति सुरक्षित रखी है। यहां सदियों पुरानी बंगाल की इस कहानी में एक और मोड़ है-'जाह' उस सिराज-उद-दौला का उत्तराधिकारी नहीं था, जो प्लासी की लड़ाई में रॉबर्ट क्लाइव से हारा था बल्कि उस मीर जाफर की संतान था, जिसने 1757 में बंगाल के नवाब से विश्वासघात कर अंग्रेजों का साथ दिया था।

ऐसा नहीं है कि विश्वासघात केवल बंगाल में ही होता है। यहां, पंजाब के मैदानों की गर्मी और मिट्टी के बीच, गत शुक्रवार सत्ताधारी आम आदमी पार्टी में पड़ी फूट-जब दलबदल करने वाले 7 सांसदों में से 3 भाजपा में शामिल हो गए- ने राजनीतिक हलकों में सिहरन पैदा कर दी। संदेश साफ है, न तो आने वाले हफ़्ते में बंगाल में, और न ही पंजाब में- जहां एक साल से भी पहले चुनाव होने हैं, भाजपा कोई कसर छोड़ेगी। उसे विश्वास है कि देश के दो छोरों पर स्थित इन दोनों राज्यों में, जहां वह आजतक अकेले अपने दम पर शासन नहीं कर पाई, वहां सत्ता हासिल करने का मौका मिल सकता है, और ऐसा करने के लिए वो हर चीज करेगी, जो कर सकती है।

पानीपत के प्रथम युद्ध के बाद गुजरे 500 सालों में, बहुत कुछ बदल गया है, लेकिन बहुत कुछ वैसा ही बना हुआ है-पहले विश्व युद्ध के परिप्रेक्ष्य में टीएस इलियट ने 'द वेस्ट लैंड' लिखते समय, पता नहीं बाबर के बारे में सोचा होगा या नहीं, जब उन्होंने युद्ध से उपजी नैतिक शून्यता और थकावट को व्यक्त करती अविस्मरणीय पंक्ति लिखी थी : अप्रैल क्रूरतम महीना है... । शुक्र है यह महीना जल्द ही खत्म होने जा रहा है।

चिंगारी पड़ते ही लपटें

सरकार ने उलझे हालात का हल निकालने की कोई गंभीर कोशिश नहीं की है। उसने समस्या को महज कानून-व्यवस्था के नजरिए से देखा है। मगर उस मोर्चे पर भी कामयाबी नहीं मिली है, जिसकी मिसाल ताजा घटनाएं हैं। मणिपुर में हालात लगातार इतने सुलगे हुए हैं कि कोई भी चिंगारी पड़ते ही लपटें उठने लगती हैं। बिशुनपुर जिले में मंगलवार को बम फेंके जाने की घटना के बाद यही हुआ। बम एक आम परिवार के घर पर फेंका गया, जिसमें दो बच्चों की मौत हो गई। उसके बाद भड़की भीड़ ने जगह- जगह सुरक्षा ठिकानों सहित अन्य स्थलों को निशाना बनाया। उन पर हुई पुलिस कार्रवाई में दो और लोग मारे गए। पांच जिलों में कर्फ्यू लगाते हुए इंटरनेट बंद करना पड़ा। बम संभवत: कुकी उग्रवादियों ने फेंका, जिसका शिकार मैतेई परिवार बना।

बाद में विरोध प्रदशर्नों के दौरान मारे गए दोनों व्यक्ति मैतेई समुदाय के ही हैं। इन घटनाओं ने फिर जाहिर किया है कि मणिपुर में हालात लगातार असामान्य बने हुए हैं। बल्कि मई 2023 में हिंसा शुरू होने के बाद से वहां मैतेई और कुकी समुदायों के बीच खाई लगातार चौड़ी होती गई है। इससे पूरे राज्य में अविश्वास का माहौल है। केंद्र और राज्य सरकारों ने उलझते गए हालात का हल निकालने की कोई गंभीर कोशिश नहीं की है। उन्होंने समस्या को महज कानून- व्यवस्था के नजरिए से देखा है। मगर उस मोर्चे पर भी प्रशासन कामयाब नहीं हुआ है, जिसकी मिसाल ताजा घटनाएं हैं। वैसे जहां अशांति की जड़ में दो समुदायों के बीच जारी तनाव हो, वहां कानून-व्यवस्था संबंधी उपायों से सामान्य स्थिति बहाल नहीं की जा सकती।

इस मोर्चे पर सत्ताधारी दल या किसी अन्य राजनीतिक पक्ष ने जमीनी पहल नहीं की है। आवश्यकता दोनों में समुदायों के बीच संवाद बनाने और सद्भाव पैदा करने की है, ताकि उनमें एक- दूसरे के प्रति गहराते गए वैर भाव को दूर करने का रास्ता निकले। फिलहाल सूरत यह है कि कुकी संगठन अलग प्रदेश की मांग पर अड़े हुए हैं। उन्हें नहीं लगता मैतेई बहुल मणिपुर में वे सुरक्षित रह पाएंगे। केंद्र ने मणिपुर में मुख्यमंत्री बदल कर नई सरकार में कुकी विधायकों को नुमाइंदगी देते हुए मसले का हल निकालने की कोशिश की। लेकिन उससे बात नहीं बनी है। अतः अब ऐसी जमीनी पहल की जरूरत है, जिसमें दोनों पक्षों का भरोसा और भागीदारी हो।

बच्चों के नखरे उठाने और पालन पोषण करने में आती है दिक्कत?

एक्सपर्ट से जान हैंडल करने के टिप्स

नखरे बच्चों का गहना हैं। बच्चे चंचल हों तो चिंता की बात नहीं होती, लेकिन उनमें आवश्यकता से अधिक गंभीरता हो तो जरूर चिंता होती है। लेकिन कभी-कभी बच्चों का नखरा संभालना मुश्किल हो जाता है। कब उनका नखरा जिद बन जाता है और कब जिद जी का जंजाल बन जाती है, माता-पिता समझ ही नहीं पाते। इसके लिए, मानसिक स्वास्थ्य और व्यवहार विज्ञान के प्रमुख मनोचिकित्सक डॉ. राहुल से जानें, बच्चों नखरे हैंडल करने के टिप्स।

जब हाथ से निकलने लगता है नखरा

अपने मन का न होने पर पैर पटकने लगना, चीखना-चिल्लाना, दीवार पर हाथ-पैर मारने लगना, काटना या जानबूझकर खाना छोड़ देना कुछ ऐसे लक्षण हैं, जो दिखाते हैं कि आपके बच्चे का नखरा अब जिद में बदल चुका है और आपको उसे संभालने के लिए मेहनत करनी होगी। इस बिंदु पर अगर आपने संयम खोया तो बच्चे को संभालना मुश्किल हो सकता है। सामान्य तौर पर दो साल की उम्र के बाद से बच्चे इस तरह के नखरे दिखाने लगते हैं।

नखरे का कारण समझिए

इस उम्र में बच्चे आमतौर पर हताशा के कारण जिद करने लगते हैं। होता यह है कि बच्चे अपनी बात को पूरी तरह प्रकट नहीं कर पाते हैं। मन और भावनाओं की तुलना में उनका संवाद कम विकसित होता है, इसी कारण उन्हें हताशा होने लगती है। इसी हताशा में बच्चे जिद करते हैं। अगर आप उनकी बात समझ लें तो उन्हें समझाना आसान हो जाता है।

शांत बने रहिए

जब बच्चा नखरे कर रहा हो तो आपका शांत बने रहना जरूरी हो जाता है। नम्रता के साथ-साथ आपको दृढ़ता से उसे समझाना चाहिए। कोशिश कीजिए वह किसी भी तरह खुद को नुकसान न पहुंचाए। उसे उन चीजों या परिस्थितियों से दूर रखिए, जिनसे उसे गुस्सा आता है। उसे डांटने के बजाय संभलने का मौका दीजिए। जैसे ही लगे कि बच्चा कोई जिद करने वाला है, बिना ज्यादा प्रतिक्रिया दिए उसे वहां से हटाकर किसी और बात में बहला दीजिए।

दिल पर मत लगाइए बात

ऐसी स्थिति में बच्चे बहुत कुछ ऐसा कह या कर देते हैं, जो माता-पिता के रूप में आपको बुरा लग सकता है। उन बातों को दिल से लगाकर गुस्सा मत होइए। न ही आपको उसके व्यवहार के लिए स्वयं को दोषी मानने की जरूरत है। ध्यान रखिए कि बच्चा जो कर रहा है उसका कारण आप नहीं, उसकी हताशा है। बच्चा किसी सार्वजनिक स्थान जैसे मॉल या पार्क आदि में ऐसा करे, तब आपका धैर्य रखना और भी जरूरी हो जाता है।

रखें इन बातों का ध्यान

घर में कोई मेहमान आने वाला हो तो बच्चे को पहले से उसके बारे में बता दें। ऐसे मामलों में बच्चे ज्यादा सरप्राइज पसंद नहीं करते हैं। बच्चों को प्रेम से समझाइए कि मेहमानों के सामने कैसा व्यवहार करना चाहिए। इसके अलावा, अगर बच्चों को कहीं लेकर जाएं तो कोशिश करें कि उनका पसंदीदा खिलौना साथ रहे। इससे बच्चे को संभालना आसान हो जाता है।

इन चीजों की मदद से करें अपने हैंडबैग की सफाई

ज्यादातर महिलाएं अपने लंच बॉक्स से लेकर खाने की छोटी चीजें भी पर्श में रखती हैं। ऐसे में पर्स काफी ज्यादा गंदा हो जाता है। अगर आपका भी हैंडबैग महंगा है और काफी जल्दी गंदा हो गया है तो आपको कुछ आसान हैक्स की मदद से अपने हैंडबैग की सफाई करनी होगी। आज के इस आर्टिकल में हम आपको बताएंगे कि आप कैसे अपने हैंडबैग की मिनटों में सफाई कर सकती हैं।

फालतू कागजात हटा दें

हैंडबैग में रखा फालतू कागजात को आपको हटाना होगा। यह हैंडबैग को काफी ज्यादा गंदा करते हैं। इतना ही नहीं, इसके कारण आपके बैग में सामान रखने की भी जगह नहीं होती है। अगर हैंडबैग की सफाई करनी है तो इन चीजों को हटाना होगा।

ड्राई क्लीन करें

आप अपने हैंडबैग को समय- समय पर ड्राई क्लीन करते रहना चाहिए। इससे बैग क्लीन रहता है। ड्राई क्लीन करने के लिए बैग में रखा सारा सामान निकालना होगा और सूती कपड़ों की मदद से पूरे हैंडबैग की सफाई करनी होगी। ऐसा करने से आपका हैंडबैग साफ हो जाएगा।

टिफिन ध्यान से रखें

अगर आप अपने बैग में टिफिन रखती हैं तो टिफिन को किसी बैग में करके रखना चाहिए। इससे आपके बैंक में गेवी वाली चीजें नहीं गिरेगी। यह आपके महंगे हैंडबैग को खराब कर सकता है। हालांकि इस स्थिति में आपको अपने हैंडबैग को पानी की मदद से धोना होगा। बार- बार हैंडबैग को धोने से यह पुराना हो सकता है। ऐसे में आपको इन चीजों का खास ध्यान रखना है।

इन बातों का रखें ध्यान

- हैंडबैग की सफाई करते समय जल्दबाजी ना करें।
- हैंडबैग की सफाई के समय हार्ड ब्रश का इस्तेमाल ना करें।
- हैंडबैग की सफाई के समय डिटर्जेंट का इस्तेमाल ना करें।

इन चीजों से करें सफाई

- हैंडबैग की सफाई गुनगुना पानी से करें
- हैंडबैग की सफाई लिक्विड डिटर्जेंट से करें
- हैंडबैग की सफाई स्टीमर से करें

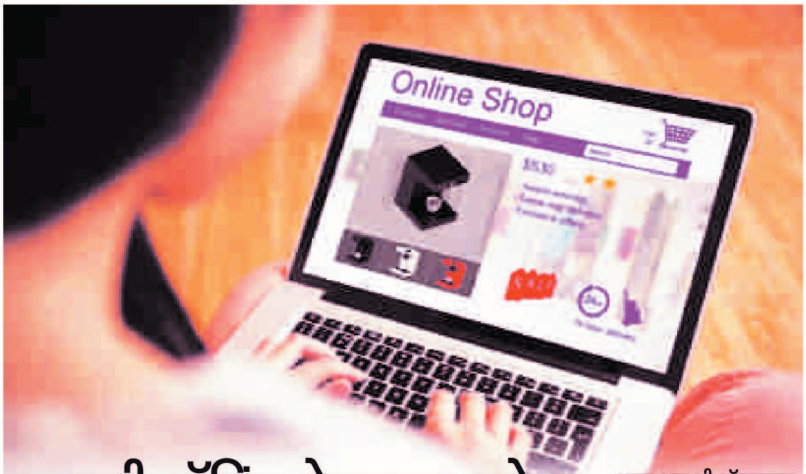

नकली शॉपिंग वेबसाइट को पहचानने के ये तरीके आप भी जानें

बाद में नहीं होगा पछतावा

अगर आप भी ऑनलाइन शॉपिंग करना पसंद करती हैं तो आपको बता दें इन दिनों कई लोग बड़े- बड़े ब्रांड्स के नाम पर नकली शॉपिंग वेबसाइट बना देते हैं। ऐसे में आपको इन वेबसाइट से बचकर रहना चाहिए। अब आप सोच रहे होंगे आखिर नकली वेबसाइट के बारे में कैसे पता करें कि यह असली वेबसाइट है या नकली।

टेक्नोलॉजी के इस जमाने में लोग बाहर जाने से ज्यादा ऑनलाइन शॉपिंग करना ही पसंद करते हैं। अगर आप भी ऑनलाइन शॉपिंग करना पसंद करती हैं तो आपको बता दें इन दिनों कई लोग बड़े- बड़े ब्रांड्स के नाम पर नकली शॉपिंग वेबसाइट बना देते हैं। ऐसे में आपको इन वेबसाइट से बचकर रहना चाहिए। अब आप सोच रहे होंगे आखिर नकली वेबसाइट के बारे में कैसे पता करें कि यह असली वेबसाइट है या नकली। ऑनलाइन कई शॉपिंग वेबसाइट ऐसे हैं जो यूजर्स से पैसे तो ले लेते हैं लेकिन उनका सामान उन तक नहीं पहुचाते हैं। चलिए जानें कैसे आप फर्जी वेबसाइट को पहचान सकती हैं।

खराब वेबसाइट डिजाइन

अगर आप किसी वेबसाइट पर पहली बार गए हैं तो आपका ध्यान उस वेबसाइट के डिजाइन पर जा रहा होगा। ऐसे में अगर आपको वह देखने में अजीब लगे तो आपको सावधान हो जाना चाहिए। वेबसाइट अपने डिजाइन पर काफी ज्यादा ध्यान देते है। ऐसे में फर्जी वेबसाइट इन चीजों पर ध्यान नहीं देते। वह लोकल डिजाइन बना देते हैं। ऐसे में आप फर्जी वेबसाइट को पकड़ सकती हैं।

अधूरी प्रोडक्ट की जानकारी

अगर आप किसी प्रोडक्ट के देख रहे हैं और उस प्रोडक्ट के बारे में पूरे तरीके से जानकारी नहीं दी गई हैं तो आपको तुरंत समझ जाना है की यह वेबसाइट फर्जी है। असली वेबसाइट अपने प्रोडक्ट की पूरे तरीके से जानकारी देते हैं। वहीं नकली की करें तो वह ज्यादा से ज्यादा प्रोडक्ट सस्ते दाम पर देते हैं। ताकि लोग उसका कम दाम देखकर तुरंत उसे आर्डर करें।

इन 3 टिप्स की मदद से पहचानें फेक वेबसाइट

आजकल कई सारे साइबर अपराध हो रहे हैं। अलग-अलग तरह के ऑफर और डिस्काउंट के बारे में बता कर कई फेक वेबसाइट की मदद से ऑनलाइन ठगी हो रही है लेकिन अगर आप इन साइबर अपराध से बचना चाहती हैं तो आपको फेक वेबसाइट की पहचान करना आना चाहिए। इस लेख में हम आपको बताएंगे कि आप कैसे फेक वेबसाइट की पहचान कर सकती हैं।

चेक करें वेबसाइट का एड्रेस टाइप

आपको वेबसाइट का एड्रेस टाइप सबसे पहले चेक करना चाहिए। आपको बता दें कि वेबसाइट के एड्रेस में कई तरह की जानकारी होती है जिससे आप यह पता कर सकते हैं कि वेबसाइट फेक है या नहीं। अगर साइट का यूआरएल एचटीटीपीएस से शुरू होता है तो ज्यादातर ऐसी वेबसाइट असली होती हैं लेकिन कई बार फेक वेबसाइट की तरह ही यूआरएल फेक वेबसाइट के ठग भी बना लेते हैं। आप वेबसाइट को ओपन करने से पहले माउस को लिंक पर ले जाएं। इससे यूआरएल और हाइपरलिंक पॉप अप के रूप में दिख जाएगा। जिससे आपको वेबसाइट की पहचान करने में मदद मिलेगी। इस तरह से आप यह पता कर पाएंगी की वेबसाइट फेक है या फिर असली है।

ऐसे करें चेक

वेबसाइट पर लिखी गई अंग्रेजी को भी चेक करें और साथ ही आपको वेबसाइट के डोमेन नेम को जरूर चेक करना चाहिए। इसके अलावा आपको यह भी चेक करना चाहिए कि वेबसाइट में नीचे स्क्रॉल करने पर कॉपीराइट संबंधी जानकारी दी गई है या फिर नहीं। साथ ही आपको यह भी देखना चाहिए कि यूआरएल के आगे लॉक का निशान बना हुआ है कि नहीं। अगर यूआरएल के आगे लॉक का निशान बना होता है तो यानी की वह फेक वेबसाइट नहीं होती है। इन सभी चीजों को ध्यान रखकर आप यह पता कर सकती हैं कि वेबसाइट फेक है या फिर असली वेबसाइट है।

देखें वेबसाइट सर्टिफिकेशन

अगर आप वेबसाइट के होमपेज और लॉगिन पेज पर एसएसएल सर्टिफिकेशन को चेक करेंगी तो आपको यह पता चल जाएगा कि वेबसाइट फेक है या फिर वेबसाइट असली है। इसके साथ ही आपको यह भी चेक करना चाहिए कि वेबसाइट पर कई आक्रामक विज्ञापन है या नहीं क्योंकि अगर आप वेबसाइट खोलती हैं और साइट पर कई तरह के आक्रामक विज्ञापन आपको नजर आते हैं तो समझ जाएं कि वह विज्ञापन वायरस से जुड़े हुए भी हो सकते हैं इसलिए आपको इन वेबसाइट पर तुरंत भरोसा करके अपनी पर्सनल जानकारी को शेयर नहीं करना चाहिए।

बनना चाहती हैं बेस्ट बहू, तो शादी के बाद ससुराल वालों को ऐसे करें इंप्रेस

शादी के बाद लड़कियों के मन में अलग-अलग तरह की बातें चलती रहती हैं। वह सोचती हैं कि आखिर ऐसा कौन सा तरीका अपनाया जाए जिससे वो ससुराल वालों का दिल जीत लें। इस दौरान वो खाना बनाने से लेकर बातचीत का हर वो तरीका अपनाती हैं। बता दें कि ससुराल जाने के बाद लड़कियों के जीवन में कई तरह के बदलाव आते हैं, इस दौरान उन्हें नए तौर-तरीकों से अपने जीवन की शुरुआत करनी पड़ती है।

वहीं ससुराल वालों को इंप्रेस करना हर लड़की के लिए किसी मुश्किल टास्क से कम नहीं। कहा जाता है कि अगर ससुराल वालों के दिल में जगह बनाना चाहती हैं तो सबसे पहले दुल्हन को अपने सास-ससुर का दिल जीतना होगा। ऐसे में आज हम बताएंगे कुछ ऐसे तरीके जिसकी मदद से आप न सिर्फ ससुराल वालों को इम्प्रैस कर सकती हैं बल्कि बेस्ट बहू भी बन सकती हैं।

पार्टनर की लें मदद

घर में आने के बाद हर किसी को समझने के लिए अपने पार्टनर की मदद लें। अगर किसी का बर्ताव आपके प्रति सही नहीं है तो उस बारे में उनसे चर्चा करें। पार्टनर आपको सभी से मिलने में मदद कर सकता है और बेहतर राय दे सकता है। नए घर में चीजों को बेहतर तरीके से करने के लिए उनसे सलाह लेती रहें।

घर के किसी एक सदस्य को बनाएं दोस्त

ससुराल में कई ऐसे लोग होते हैं जो जल्द ही आपके दोस्त बन जाते हैं। इसमें देवर या फिर ननद कोई भी हो सकता है। ऐसे में उनकी पसंद को जानें और पर्सनल बॉन्ड बनाएं। जिससे आप दोनों एक दूसरे से खुलकर बात कर सकें और अपनी बातें शेयर कर सकें। घर में किसी एक से अच्छी बॉन्डिंग होने से आप बाकी लोगों के बारे में अच्छी तरह जान सकती हैं।

हर किसी को खुश करने न करें कोशिश

कोशिश करें कि सभी आपके काम या फिर व्यवहार को पसंद करें। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आप जबरदस्ती काम करें। इसके अलावा अगर आपको कुछ बातें पसंद नहीं है तो सीधे ना कर दें। ऐसा जरूरी नहीं कि आप हर किसी की बातों पर हंसे या फिर हां में हां मिलाएं। दूसरों को जानने के अलावा खुद के बारे में भी लोगों को जानने दें। यह बेहद जरूरी है कि घर के बाकी सदस्यों की तरह आपको भी उतना ही सम्मान मिले।

किसी के लिए न बनाएं गलत धारणा

सास और ससुर के प्रति पहले से गलत धारणा न बनाएं बल्कि उन्हें समझने के लिए वक्त लें। हर वक्त उनसे बात करें और अच्छी बॉन्डिंग बनाएं। आमतौर पर सास की नेगिटिव छवि बनाई जाती है, ससुराल में घर के बाकी सदस्यों की तरह उन्हें भी अपना प्यार दें और उनके साथ बेहतर रिश्ता बनाएं।

सोच-समझकर बातें करें शेयर

लोग आपसे पर्सनल लाइफ या फिर शादी से पहले के रिलेशनशिप को लेकर सवाल कर सकते हैं। ऐसे में सबकुछ बताने के बजाय उन्हीं बातों को शेयर करें जो आप बताना चाहती हैं। कई बार ऐसा होता है जब आपकी पास्ट रिलेशनशिप का प्रभाव आपकी मैरिड लाइफ पर भी पड़ सकता है। इसलिए अपनी पसंद या फिर ख्वाहिशों के बारे में बताएं।

अपने कपड़ों से करें इंप्रेस

कई लड़कियों को अपनी पसंद के कपड़े पहनने की आदत होती हैं। ऐसे में जब कोई फंक्शन या फिर त्योहार हो तो उसके हिसाब से कपड़े पहने। नई नवेली दुल्हन को हर कोई देखना चाहता हैं, ऐसे में आप अच्छी तरीके से तैयार होती हैं तो लोग आपकी तारीफ करेंगे। आपकी तारीफ से ससुराल वाले भी खुश होंगे।

फैमिली के शिष्टाचार में दिखाएं रुचि

हर एक परिवार के अपने नियम होते हैं और भले ही आपको इसकी आदत नहीं है लेकिन उनके साथ भागीदारी जरूर बनायें। घर की खुशी के लिए उनके नियमों का पालन करें, लेकिन अगर आपको कुछ नियम नहीं पसंद तो उन्हें इस बारे में बताएं। उन्हें अपनी बातों से समझाएं कि आप ऐसा नहीं कर सकती हैं।

विजय वर्मा ने बताया मुश्किल थी 'मटका किंग' की शूटिंग

विजय वर्म इन दिनों अपनी हालिया रिलीज वेब सीरीज 'मटका किंग' को लेकर चर्चाओं में हैं। बातचीत में विजय ने इस प्रोजेक्ट को चुनने की वजह, शूटिंग के दौरान आई चुनौतियों और निर्देशक नागराज मंजुले के साथ काम करने के अनुभव पर खुलकर बात की। बातचीत के दौरान उन्होंने इस खेल की बारीकियों, उसे समझने में आई मुश्किलों और उससे जुड़ी अपनी निजी यादों का भी जिक्र किया।

नागराज के साथ काम करने की इच्छा थी 'मटका किंग' को हां कहने की वजह पूछे जाने पर विजय ने सबसे पहले निर्देशक नागराज मंजुले का नाम लिया। उन्होंने कहा, 'नागराज मंजुले के साथ काम करना मेरा सपना था पर जब मैंने अपने किरदार के बारे में सुना तो थोड़ा डर गया कि मैं यह कर पाऊंगा या नहीं। डर इसीलिए था क्योंकि नागराज की फिल्मों में हर बारीकी पर ध्यान दिया जाता है।

मटके का खेल समझना था मुश्किल

शूटिंग के दौरान सबसे बड़ी चुनौती क्या रही? इस पर विजय ने कहा, 'सबसे मुश्किल था मटके का खेल समझना। बाहर से देखने पर लगता है कि ये सिर्फ ताश का खेल है लेकिन जब आप उसे किरदार के साथ जीते हैं, तब पता चलता है कि उसके भीतर कितनी बारीकियां हैं। ताश खेलते हुए डायलॉग बोलना, बातचीत करना, एक्सप्रेशन बनाए रखना और साथ ही उस दुनिया में बने रहना... ये सब एक साथ करना अपने आप में बड़ा चैलेंज था।'

ट्रेन के सफर में खेलता था ताश

दिलचस्प बात यह है कि ताश से विजय का रिश्ता सिर्फ इस सीरीज तक सीमित नहीं है। उन्होंने बताया कि असल जिंदगी में भी वह ताश खेल चुके हैं। विजय बोले, 'मैंने रियल लाइफ में भी खूब ताश खेला है। हैदराबाद से किशनगढ़ के ट्रेन सफर के दौरान एक अलग ही माहौल हुआ करता था। लोग अपने सब जरूरी सामान के साथ ताश लेकर चलते थे, ताकि सफर आराम से कट जाए। मैं भी उन्हीं में शामिल था और मुझे भी सफर के दौरान ताश खेलना पसंद था।'

बातचीत के दौरान जब विजय से पूछा गया कि ऐसी कौन सी लत है, जो चाहकर भी छूट नहीं रही? तो विजय ने हंसते हुए कहा, 'मैं बहुत कोशिश करता हूं कि वक्त पर सो जाऊं लेकिन पता नहीं क्यों ऐसा हो नहीं पाता। रात के एक-दो बज ही जाते हैं। कोशिश तो करता हूं, लेकिन रोज बुरी तरह फेल हो जाता हूं। यही मेरी एक ऐसी आदत है, जिसे चाहकर भी बदल नहीं पा रहा हूं।'

परब्रमता चटर्जी के साथ काम कर खुश हैं निमृत कौर अहलूवालिया

कई बार शूटिंग के दौरान कलाकारों के बीच अच्छी बॉन्डिंग दिखने लगती है। ऐसी ही दोस्ती अभिनेत्री निमृत कौर अहलूवालिया और बंगाली अभिनेता परब्रमता चटर्जी के बीच देखने को मिली। दोनों इन दिनों एक नई थ्रिलर-एक्शन वेब सीरीज की शूटिंग कर रहे हैं। निमृत ने हाल ही में सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर की, जिसमें उन्होंने अपने को-स्टार की जमकर तारीफ की और उन्हें सबसे अच्छा इंसान बताया। निमृत कौर अहलूवालिया ने अपने इंस्टाग्राम पर एक सेल्फी शेयर की, जो नैनिताल की शूटिंग के दौरान ली गई है। इस तस्वीर में वह और परब्रमता चटर्जी साथ खड़े नजर आ रहे हैं और कैमरे की तरफ मुस्कुराते हुए दिख रहे हैं। तस्वीर में उनकी दोस्ती साफ दिख रही है। इस फोटो के साथ निमृत ने कैप्शन में लिखा, ''परब्रमता चटर्जी इस दुनिया के सबसे अच्छे लोगों में से एक हैं और उनके साथ काम करना मेरे लिए सम्मान की बात है।'' फिलहाल इस नई वेब सीरीज का नाम अभी सामने नहीं आया है और इसके बारे में ज्यादा जानकारी भी गोपनीय रखी गई है। फिल्म की शूटिंग पिछले हफ्ते शुरू हो चुकी है और इसे एक थ्रिलर-एक्शन कहानी के रूप में बनाया जा रहा है। इससे पहले फरवरी में खबर आई थी कि निमृत एक नई

थ्रिलर सीरीज में नजर आएंगी, जिसका नाम 'अब होगा हिसाब' बताया जा रहा है। इसकी कहानी पंजाबी संस्कृति से जुड़ी होगी। इस शो में संजय कपूर, शहीर शेख और मौनी रॉय जैसे बड़े कलाकार भी शामिल हैं। इस सीरीज को एरे स्टूडियो प्रोड्यूस कर रहा है और इसका निर्देशन दिव्यांशु मल्होत्रा कर रहे हैं। कहानी एक रहस्य और बदले पर आधारित है, जिसमें इंसानी भावनाएं, सत्ता की लड़ाई और छिपे हुए राज दिखाए जाएंगे। इस कहानी में निमृत का किरदार काफी अहम बताया जा रहा है। बता दें कि निमृत इससे पहले पंजाबी फिल्म 'शौकी सरदार' में नजर आई थीं। इस फिल्म में उनके साथ गुरु रंधावा, बब्बू मान और गुग्गू गिल जैसे कलाकार भी थे। यह फिल्म 16 मई 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी।

'जाने अनजाने हम मिले' में चुनौतीपूर्ण रहा नेगेटिव किरदार

टीवी शो 'जाने अनजाने हम मिले' में कीर्ति का किरदार निभा रही अभिनेत्री गौरी अग्रवाल ने अपने रोल में आए बड़े बदलाव को काफी चुनौतीपूर्ण बताया। शुरुआत में पॉजिटिव और प्यारी लड़की के रूप में दिखाई गई कीर्ति अब पूरी तरह नेगेटिव किरदार में बदल चुकी है। इस बदलाव ने गौरी को अभिनय के नए आयाम सिखाए हैं। गौरी अग्रवाल ने हाल ही में एक इंटरव्यू में बताया कि किरदार में यह बड़ा ट्रांसफॉर्मेशन उनके लिए फिजिकली और इमोशनली दोनों तरह से बहुत डिमांडिंग रहा है। उन्होंने कहा, 'शुरुआत में कीर्ति बहुत पॉजिटिव थी, लेकिन धीरे-धीरे उसका किरदार ग्रे शेड्स में बदलता गया और अब वह पूरी तरह नेगेटिव हो चुकी है। मुझे लगातार खुद को याद दिलाना पड़ता है कि जो कुछ कीर्ति कर रही है, वह उसके किरदार की सोच के अनुसार है, भले ही व्यक्तिगत रूप से मुझे उन कामों को सही ठहराना बहुत मुश्किल लगे।' गौरी ने कुछ मुश्किल सीन्स का जिक्र करते हुए बताया, 'कुछ सीन ऐसे थे जहां मेरी अपनी नैतिकता मुझे रोक रही थी। उन सीन्स को पूरी शिद्दत से करना मेरे लिए भावनात्मक रूप से बहुत कठिन था। एक अभिनेत्री के रूप में मुझे समझना था कि मैं सिर्फ अपने किरदार के सफर को आगे बढ़ा रही हूं। ऐसे सीन इमोशनली और फिजिकली दोनों तरह से काफी चुनौतीपूर्ण रहे, क्योंकि मुझे यह सुनिश्चित करना होता था कि सीन असली लगें, लेकिन किसी भी हद को पार न करें।' अभिनेत्री ने आगे कहा कि नेगेटिव किरदार बनने के बाद कीर्ति के इंटेंस फैसलों को समझना और इमोशनल स्तर पर उन्हें स्वीकार करना उनके लिए लगातार चलने वाली प्रक्रिया रही है। कीर्ति जिस हद तक जाती है, रीत और राघव को नुकसान पहुंचाना, गुस्सा दिखाना या खुद को चरम की स्थिति में ले जाना, यह सब बहुत खतरनाक है। इन चीजों को समझना और इमोशनली सही ठहराना मेरे लिए काफी मुश्किल रहा है। टीवी शो 'जाने अनजाने हम मिले' में गौरी अग्रवाल के साथ भारत अहलावत राघव का किरदार निभा रहे हैं, जबकि आयुषी खुराना रीत की भूमिका में हैं।

अपने पिता को याद कर भावुक हुईं अंकिता लोखंडे

छोटे पर्दे की लोकप्रिय अभिनेत्री अंकिता लोखंडे ने अपने पिता को याद करते हुए कहा है कि वह अपनी हर सांस में उन्हें याद करती हैं। अंकिता के पिता शशिकांत लोखंडे का निधन लंबी बीमारी के बाद 2023 में हो गया था। अंकिता ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी में अपने पिता के साथ की एक पुरानी तस्वीर साझा की है। तस्वीर में अभिनेत्री अपने पिता के साथ हैं। अंकिता ने कैप्शन में लिखा, 'मैं हर सांस में आपको याद करती हूं। उन्होंने आगे लिखा, 'जब आपके माता-पिता आपके साथ हों तो उनसे प्यार करें, वरना मेरा यकीन मानिए, बाद में आपको सिर्फ पछतावा होगा। वर्क फ्रंट पर, अंकिता और उनके पति विक्की जैन अभी 'लाफ्टर शेफ्स फन अनलिमिटेड' के नए संस्करण में नजर आ रहे हैं, जिसमें अर्जुन बिजलानी, करण कुंद्रा, एल्विश यादव, जन्नत जुबैर, कृष्णा अभिषेक, कश्मीरा शाह, निया शर्मा, अभिषेक कुमार और समर्थ जुरेल जैसे कलाकार हैं। अंकिता ने पवित्र रिश्ता में अर्चना मानव देशमुख के रोल से अभिनय के क्षेत्र में कदम रखा था। इसके बाद वह झलक दिखला जा 4 और कॉमेडी सर्कस में दिखीं। होंने एक थी नायिका के दो एपिसोड में भी किया।

आयुष्मान खुराना ने बताया कैसे सेलेक्ट करते हैं स्क्रिप्ट?

आयुष्मान खुराना इस साल तीन फिल्मों में नजर आने वाले हैं। इन दिनों आयुष्मान 'पति पत्नी और वो दो', 'उड़ता तीर' और 'ये प्रेम मोल लिया' को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं। आयुष्मान ने आने वाली फिल्मों में अपने किरदारों को लेकर बात की। साथ ही बताया कि वह हर फिल्म के साथ कुछ नया करने की कोशिश क्यों करते हैं?

आयुष्मान की तीन फिल्में

आयुष्मान खुराना इस साल 2026 में तीन फिल्मों में नजर आने वाले हैं, ये सभी फिल्में एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। पहली फिल्म कॉमेडी और रिश्तों पर है। जबकि दूसरी फिल्म अनोखी और विद्रोही है। तीसरी फिल्म परिवार और परंपरा पर आधारित है। पहली फिल्म 'पति पत्नी और वो दो', जो 15 मई को रिलीज होगी। दूसरी फिल्म 'उड़ता तीर', जो 11 सितंबर को आएगी। तीसरी फिल्म 'ये प्रेम मोल लिया', जो 27 नवंबर को रिलीज होगी।

फिल्में कैसे सेलेक्ट करते हैं आयुष्मान

आयुष्मान ने कहा, 'मैं कभी भी जानबूझकर अलग तरह के रोल दिखाने की कोशिश नहीं करता। मेरे लिए सिर्फ वो कहानियां महत्वपूर्ण हैं, जो मुझे दर्शक के रूप में अच्छी लगती हैं। तीन अलग-अलग फिल्में एक ही साल में करना रोमांचक है, लेकिन यह जिम्मेदारी भी है। यह मुझे हर बार नया बनने के लिए प्रेरित करता है।'

'मैं मनोरंजक फिल्में करना चाहता हूं'

आयुष्मान ने कहा, 'आज के दर्शक कुछ नया देखना चाहते हैं। वे एक ही चीज बार-बार नहीं देखना चाहते। मैं ऐसी फिल्में बनाना चाहता हूं, जो मनोरंजक हों और कुछ संदेश भी दें। अगर लोग इसे अलग तरह की फिल्में कह रहे हैं, तो मैं आभारी हूं। लेकिन मेरे लिए यह सिर्फ जिज्ञासु बने रहना और ईमानदार रहना है।

रीजनल एक्ट्रेस के टैग से दर्द होता है, हर लड़की को दबंग होना चाहिए

'जो मेहनत करता है, उसे फल मिलता है।' कहना है जानी-मानी एक्ट्रेस सई ताम्हणकर का। मराठी के साथ-साथ हिंदी फिल्म जगत में अपनी प्रतिभा की चमक बिखेरने वाली सई 'दुनियादारी', 'हंटर', 'मिमी', 'बेरोजगार', 'धुरला', 'दलदल' और 'डब्बा कार्टलट जैसे हिंदी-मराठी के प्रोजेक्ट्स से खुद को वर्सेटाइल एक्ट्रेस के रूप में साबित कर चुकी हैं। वह अपने सफर को बहुत ही ग्रेसफुल नजरों से देखती हैं और बहुत विनम्र महसूस करती हैं। इन दिनों वह चर्चा में हैं अपनी नई वेब सीरीज 'मटका किंग' से। उनसे एक बातचीत।

स्कूल में खेलती थी कबड्डी-कराटे

सई आज मराठी और हिंदी इंडस्ट्री में अपना अच्छा नाम बना चुकी हैं, लेकिन उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि वह एक्ट्रेस बनेंगी। वह बताती हैं, 'मेरे पिता जहाज में काम करते थे और अक्सर समुद्री यात्राओं पर रहते थे। घर पर मैं और मम्मी ही होते थे, और उन्होंने मुझे हमेशा आत्मनिर्भर बनना सिखाया। मुझे मजबूत और दबंग बनाने में उनका बहुत बड़ा योगदान है। स्कूल में मैं 'कबड्डी गर्ल' के नाम से जानी जाती थी। मेरे घुटने हमेशा चोटिल रहते थे और मुझमें पारंपरिक 'लड़कियों वाली' बातें कम ही थीं। मैं टॉमबॉय थी। कॉलेज तक मेरा बॉयकट हेयरस्टाइल रहा। इसी दौरान मैंने कराटे सीखा और ऑरेंज बेल्ट हासिल की। मेरी मां और खेलों ने मेरे आत्मविश्वास को और मजबूत किया। मेरे बेबाक और बिंदास स्वभाव की वजह से लोग मेरे सामने कुछ गलत करने से हिचकते हैं। मेरा मानना है कि हर लड़की को आत्मनिर्भर और दबंग होना चाहिए।'

रीजनल एक्ट्रेस के टैग से दर्द होता है

आमतौर पर साउथ या मराठी फिल्म जगत से आई हुई एक्ट्रेसेस को रीजनल एक्ट्रेस का टैग दे दिया जाता है। इस पर वह अफसोस जताते हुए कहती हैं, 'कभी -कभार दर्द होता है कि ऐसा क्यों है? हम तो दोनी ही इंडस्ट्री में उतनी ही लगन और मेहनत काम करते हैं। हालांकि वो जमाना चला गया है, जब भाषा के आधार पर विभाजन किया जाता था। इस मुद्दे पर मैं दर्शकों से अनुरोध करना चाहूंगी कि वो हमें काम के आधार पर तौलें। जहां तक टैग देने की बात है, तो उन्हें तोड़ने में भी खूब मजा आता है। वो हमारे लिए ईंधन का काम करते हैं। मेरे जैसे और भी कई कलाकार हैं, जो इस बॉक्स को तोड़ने में लगे हुए हैं। हिंदी में 'मिमी' एक ऐसी फिल्म थी, जिसने मुझे इस टैग से बाहर आने में मदद की। मुझे अपना पहला फिल्मफेयर अवॉर्ड मिला और भी कई दूसरे पुरस्कार मिले।'

'कई बार एक्ट्रेसेस को टाइपकास्ट भी कर दिया जाता है'

सई मानती हैं कि लेबल लगाने के साथ-साथ कई बार एक्ट्रेसेस को टाइपकास्ट भी कर दिया जाता है। वह कहती हैं कि ये सालों से अंडरकरंट देखा जाता है। वह कहती हैं, 'इससे निकलने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि एक ही तरह के रोल्स के लिए ना की जाए, मगर ये बहुत मुश्किल होता है। हमारी इंडस्ट्री ही नहीं हमारा समाज भी पितृसत्ताक है, मगर इस बैकड्रॉप के बावजूद लड़कियां बहुत अच्छा काम कर रही हैं।' इससे निकलने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि एक ही तरह के रोल्स के लिए ना की जाए, मगर ये बहुत मुश्किल होता है। हमारी इंडस्ट्री ही नहीं हमारा समाज भी पितृसत्ताक है, मगर इस बैकड्रॉप के बावजूद लड़कियां बहुत अच्छा काम कर रही हैं।

प्रियंका और सामंथा लाई बदलाव

पुरुष प्रधान इंडस्ट्री में हीरोइन की तुलना में हीरो को ज्यादा अहमियत जी जाती है? इस सवाल पर वह कहती हैं, 'कुछ सालों में ये हालात बदले हैं। प्रियंका चोपड़ा और सामंथा रुथ प्रभु का इस बदलाव में बड़ा योगदान यही। इन्होने धीरे-धीरे वो ब्रैकेट्स तोड़ने शुरू किए। पहले की तुलना मैंने आज हालात बदले हैं, पहले तो बहुत ही बुरी स्थिति थी।' पे पैरिटी के मुद्दे पर सई ताम्हणकर कहती हैं, 'जब भी नेगेटिव चीजें होती हैं, उनके बारे में काफी हो-हल्ला होता है, पर सकारत्मक चीजों पर बात काम ही होती है।

वेब सीरीज के लिए छोड़ी प्राइज मनी

इंडस्ट्री में दो दशक से भी ज्यादा का समय बिता चुकी सई अपनी फीस को लेकर कहती हैं, 'मैं अगर अपनी बात करूं, तो कई बार मैं अपने मनमुताबिक अपनी फीस ले पाती हूं और कई बार नहीं ले पाती, मगर जितनी बार ले पाई, उसने मुझे बहुत हौसला दिया है। एक एक्टर को पता होता है कि कब अपनी फीस छोड़नी है और कब अड़े रहना है, क्योंकि एक्टिंग के पेशे के बावजूद कई बार हम सृजनात्मक संतुष्टि के लिए काम करते हैं, तो कई बार ऐसा मौका भी आया कि मैंने अपनी प्राइज मनी छोड़ दी हो।' 'मैंने यूट्यूब के लिए एक वेब सीरीज की थी और उसके लिए मैंने अपना मेहनताना छोड़ दिया था, मगर उसका जो रिस्पॉन्स आया था, उसका मोल कुछ हो ही नहीं सकता। उस वेब सीरीज का नाम था 'बेरोजगार'।

व्यस्त जीवन में यज्ञ का संदेश : श्रद्धा से सिद्धि, सिद्धि से वृद्धि

घर मंदिर बने या श्मशान यह हमारे व्यवहार पर निर्भर है, आज साधन बढ़ गए हैं, किंतु साधना कम हो गई है : आचार्य

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

अत्यंत श्रद्धा और वैदिक विधि-विधान के साथ वैदिक महायज्ञ एवं आध्यात्मिक प्रवचन का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। यह महायज्ञ आचार्य डॉ. अजय आर्य (स्नातक, गुरुकुल प्रभात आश्रम) के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ की पवित्र अग्नि में आहुति देकर पूरे वातावरण को शुद्ध, शांत और सकारात्मक बनाया गया। इस अवसर पर बताया गया कि आज के व्यस्त जीवन में यज्ञ, श्रद्धा और आध्यात्मिकता ही मनुष्य को संतुलन और सच्ची खुशी दे सकते हैं। यज्ञ केवल पूजा नहीं है, बल्कि यह जीवन को सही दिशा देने का माध्यम है। एक सरल कटाक्ष में कहा गया कि आज साधन तो बढ़ गए हैं, लेकिन साधना कम हो गई है, इसलिए मनुष्य के पास सब कुछ होते हुए भी शांति नहीं है।

आचार्य ने बताया कि अग्नि सभी देवताओं का मुख है, इसलिए यज्ञ में डाली गई हर आहुति देवताओं तक पहुंचती है। 33 कोटि देवता का सही अर्थ बताते हुए उन्होंने कहा कि इसका मतलब 33 करोड़ नहीं, बल्कि 33 प्रकार के देवता हैं—8 वसु, 11 रुद्र, 12 आदित्य, इंद्र और प्रजापति। आगे समझाया गया कि जिस घर में बुरे विचार, झूठ, अपमान और कलह हो, वह घर श्मशान के समान हो जाता है। जहां विद्वानों का सम्मान नहीं होता, जहां भगवान का नाम नहीं लिया जाता और जहां यज्ञ-हवन नहीं होते, वह घर भी खाली और निर्जीव बन जाता है। एक कटाक्ष में कहा गया कि आज घर बड़े हो गए हैं, लेकिन दिल छोटे हो गए हैं, इसलिए सुख घर में टिकता नहीं।

इसके विपरीत, अच्छा गृहस्थ जीवन वह है जहां प्रेम हो, मधुर वाणी हो, भगवान की पूजा हो, सत्संग हो और अतिथि का सम्मान हो। ऐसा घर ही वास्तव में सुख और शांति देता है। श्रद्धा के बारे में बताया गया कि श्रद्धा हर काम की आत्मा है। बिना श्रद्धा के किया गया काम सफल नहीं होता, जबकि श्रद्धा से किया गया छोटा काम भी बड़ा फल देता है।

प्रवचन को सरल और रोचक बनाने के लिए आचार्य ने एक प्रसंग सुनाया कि एक बार पति-पत्नी को फिटनेस के लिए सम्मानित किया गया। पति ने कहा कि मुझसे गलती हो जाए तो मुझे 5 किलोमीटर चलना पड़ता है। जब पत्नी के बारे में पूछा गया तो उसने कहा कि उन्हें मुझ पर भरोसा नहीं है, इसलिए वे भी 5 किलोमिटर पीछे-पीछे चलती हैं यह देखने के लिए कि मैं सच में चल रहा हूं या नहीं। इससे यह संदेश दिया गया कि जहां साथ और जिम्मेदारी दोनों होते हैं, वहीं संबंध मजबूत होते हैं।

एक और प्रसंग में बताया गया कि एक व्यक्ति कहता है कि मैंने शराब छोड़ दी है, लेकिन अगर कोई बहुत कहे तो थोड़ा पी लेता हूं। जब पूछा गया कि यह आपके साथ कौन है, तो वह बोला कि इसे मैंने इसलिए रखा है कि यह मुझे बार-बार कहे। इस पर समझाया गया कि मनुष्य अपनी कमजोरियों को छोड़ना नहीं चाहता, बल्कि उनके लिए बहाने बनाता है। अगर आग्रह करना ही है, तो किसी को अच्छे काम, धर्म और दान के लिए प्रेरित करें।

इस अवसर पर प्रमुख आयोजकों में सरोज गोपाल अग्रवाल, शिवानी नयन अग्रवाल, मुस्कान ऋतिक अग्रवाल, सोनू अग्रवाल सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे। अंत में आचार्य ने कहा कि जहां यज्ञ होता है वहां शुद्धता आती है, जहां श्रद्धा होती है वहां सफलता मिलती है और जहां अच्छे संस्कार होते हैं वहीं सच्चा सुख और शांति मिलती है।

खास खबर

सोमनी महाविद्यालय में समाज को जोड़ने पर हुआ मंथन

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

सर्व हिन्दू समाज द्वारा सोमनी महाविद्यालय में सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समाज के विभिन्न वर्गों एवं प्रमुखों के साथ संवाद स्थापित कर आपसी समन्वय, एकता और भाईचारे को और अधिक मजबूत करना रहा। बैठक में मुख्य वक्ता के रूप में प्रांत सामाजिक समरसता प्रमुख विश्वनाथ बोगी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि समाज की वास्तविक शक्ति उसकी एकता, समानता और परस्पर सम्मान में निहित है। उन्होंने उपस्थित समाज प्रमुखों से संवाद करते हुए सामाजिक जीवन में व्याप्त भिन्नताओं को समझने और उन्हें दूर करने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने अनेक प्रेरक उदाहरणों एवं कथाओं के माध्यम से सामाजिक समरसता के महत्व को सरल एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के दौरान विभिन्न ग्रामों से आए समाज प्रमुखों ने अपने-अपने अनुभव साझा किए तथा समाज में विद्यमान परंपराओं, रीति-रिवाजों और सामाजिक व्यवहारों पर खुलकर चर्चा की। यह भी विचार किया गया कि कहीं ऐसे प्रचलन तो नहीं हैं जो अनजाने में समाज के बीच दूरी उत्पन्न करते हों। इन विषयों पर सार्थक विमर्श करते हुए उनके सकारात्मक समाधान की दिशा में सुझाव प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर जिला संघ चालक राधेश्याम शर्मा एवं जिला कार्यवाहक कौशल वर्मा भी उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में सामाजिक समरसता को राष्ट्र निर्माण का आधार बताते हुए सभी से समाज में समावेशी सोच विकसित करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जब समाज के सभी वर्ग समान भाव से एक साथ आगे बढ़ते हैं, तभी वास्तविक विकास संभव होता है। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि भविष्य में ऐसे संवाद कार्यक्रमों का आयोजन नियमित रूप से किया जाएगा, जिससे समाज के सभी वर्गों के बीच निरंतर संवाद बना रहे और सामाजिक समरसता को व्यवहारिक रूप से लागू किया जा सके। इसके साथ ही युवाओं एवं महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने पर भी विशेष जोर दिया गया।

रहस्यमयी मंडीप खोल : न पक्की सड़कें, न सुगम रास्ता

महादेव की एक झलक पाने नदी और घने जंगलों को चीर कर पहुंचते हैं शिव भक्त

साल में एक बार अक्ती त्यौहार के बाद प्रथम सोमवार को खुलता है, गुफा

नई दृष्टिबिंदु / खैरागढ़

मंडीप खोल गुफा जो साल में एक बार अक्ती त्यौहार के बाद पहले सोमवार को खुलता है, जिसे सर्वप्रथम ठाकुर टोला राजपरिवार के पुल्स्कर परिवार के व्दारा पूजा अर्चना की जाती है। उसके बाद क्षेत्रवासीयो के व्दारा गुफा के अंदर प्रवेश कर भोलेनाथ की पूजा अर्चना कर दर्शन लाभ और आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

छत्तीसगढ़ की पावन धरा अपने भीतर न जाने कितने प्राकृतिक रहस्यों और आध्यात्मिक केन्द्रों को समेटे हुए है : उनमें से एक है खैरागढ़-छुईखदान-गंडई जिले के मंडीप खोल जो जिला मुख्यालय से 55 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है ,यह छुईखदान ब्लाक के ग्राम ठाकुर टोला पर यह गुफा स्थित है,जो साल भर में केवल एक बार अक्षय-तृतीया त्यौहार के बाद प्रथम सोमवार को जनता-जनार्दन के दर्शन के लिए इस गुफा के कपाट को राजपरिवार के सदस्यों के व्दारा खोला जाता है। इस वर्ष भी भारी सुरक्षा व्यवस्था और जनता-जनार्दन के जन सैलाब के बीच शांति पूर्ण माहौल में गुफाके कपाट को खोला गया।

घने जंगलों की चुनौती और दुर्गम डगर,16 बार नदी पार करना होगा

मंडीप खोल गुफा की यात्रा किसी कठिन परिक्षा से कम नहीं है। प्राकृतिक सुंदरता और खतरों के बीच से गुजरने वाले इस मार्ग में जलमार्ग की बाधा,गुफा तक पहुंचने के लिए भक्तों को एक ही पहाडी नदी के घुमावदार रास्तों को 16 बार पार करना पड़ता है।

कच्चे रास्ते और ऊबड़-खाबड़ रास्तों के बीच सफर पैदल तय करना पड़ता है। ठाकुर टोला और पैलीमेटा तक की पक्की सड़कें मौजूद है, उसके बाद का सफर घने जंगलों और ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों के बीच से पैदल ही तय करना पड़ता है। विशालकाय गुफा का स्वरूप प्रवेश व्दारा अत्यंत ही सकरा और छोटा है। गुफा का प्रवेश द्वार अत्यंत ही छोटा और सकरा और उसे झुक कर ही प्रवेश करना होता है। लेकिन अंदर जाते ही यह किसी महल की तरह चौड़ी हो जाती है।

प्रशासन रही मुस्तैद और भविष्य की योजनाएं भी

भारी तादाद में पहुंचे वाले श्रद्धालुओं के लिए जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन ने मुस्तैद से तयारी कर रखी थी। चप्पे-चप्पे पर पुलिस बल की तैनाती रही ताकि कोई अप्रिय घटनाएं न घट सके। इस बार 40/50 हजार से अधिक श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी थी।

स्वास्थ्य सुवीधा भी रही चुस्त, एम्बुलेंस की भी व्यवस्था की गई थी। दुर्गम क्षेत्र होने के कारण स्वास्थ्य विभाग के व्दारा विशेष शिविर लगाएं और किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए एम्बुलेंस की भी व्यवस्था कर रखी थी। श्रद्धालुओं के लिए जगह जगह भंडारे और पेयजल की व्यवस्था, जनसुविधाएं दर्शन करने आए दूरदराज से लोगों के लिए भंडारे और पेयजल की जगह जगह व्यवस्था की गई थी।

गुफा के अंदर भगवान शिव का वास

गुफा के अंदर शिवलिंग के लिए दर्शन के लिए भक्तों को लगभग 20 से 25 फीट ऊंची अस्थाई रूप से बनाएं गये लकड़ी की सिढीयो पर चढ़ना पड़ता है। कठिन चड़ाई होने के कारण कुछ चुनिंदा श्रध्दालु ही पूर्ण रूप से शिवलिंग तक पहुंच पाते हैं और दर्शन लाभ ले पाते हैं।

गुफा के अंदर आक्सीजन की कोई कमी महसूस नहीं होती

हजारों की तादाद में लोगों के अंदर मौजूद और चारों तरफ से बंद होने के बावजूद गुफा के भीतर आक्सीजन की कोई कमी महसूस नहीं होती । इसके विपरित अंदर प्रवेश करते ही दर्शन करने वाले भक्तों को एक अलौकिक ठंडक का सुखद अहसास होता है।

सड़क निर्माण का आश्वासन : कलेक्टर इंद्रजीत सिंह चंद्रवाल

ठाकुर टोला के जमींदार और ग्रामीणों के व्दारा मांग पर कलेक्टर इंद्रजीत सिंह चंद्रवाल और जनप्रतिनिधियों के व्दारा ठाकुर टोला से मंडीप खोल गुफा मार्ग तक कच्ची सड़क को जल्द ही पक्की सड़क में तब्दील करने का आश्वासन दिया।

जिला अस्पताल पहुँचे मंत्री गजेन्द्र यादव, दुर्घटना में घायलों से मुलाकात कर उपचार व्यवस्था की ली जानकारी

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

रविवार देर रात बारात से वापस लौटते समय हुई बस दुर्घटना में घायल दुर्ग के तितुरडीह क्षेत्र के नागरिकों से मिलने प्रदेश के केबिनेट मंत्री गजेन्द्र यादव आज जिला अस्पताल पहुँचे। उन्होंने अस्पताल में भर्ती सभी घायलों से मुलाकात कर उनका हालचाल जाना तथा चिकित्सकों से उपचार की जानकारी लिए। मंत्री श्री यादव ने घायलों को हर संभव बेहतर इलाज उपलब्ध कराने भरोसा देते हुए उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना किए।

केबिनेट मंत्री गजेन्द्र यादव ने बताया कि रविवार की रात दुर्घटना में घायल हुए सभी नागरिकों के उपचार में किसी भी प्रकार की लापरवाही न हो, इसके लिए प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग को निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार पीड़ित परिवारों के साथ खड़ी है और जरूरत पड़ने पर हर संभव सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

अस्पताल पहुँचकर मंत्री श्री यादव ने एक-एक मरीज से संवाद कर दुर्घटना की जानकारी लिए और उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुने। उन्होंने उपस्थित डॉक्टरों एवं नर्सिंग स्टाफ को निर्देशित किया कि सभी मरीजों का समुचित और प्राथमिकता के आधार पर इलाज सुनिश्चित किया जाए। साथ ही उन्होंने गंभीर रूप से घायलों की विशेष निगरानी रखने के निर्देश भी दिए।

केबिनेट मंत्री गजेन्द्र यादव ने जिला अस्पताल के विभिन्न वार्डो का निरीक्षण कर स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता का जायजा लिये। इस दौरान उन्होंने दवाइयों की उपलब्धता, स्वच्छता व्यवस्था, मरीजों को मिलने वाले भोजन की गुणवत्ता तथा अन्य मूलभूत सुविधाओं की जानकारी लिए और अस्पताल प्रबंधन को गंभीरता से कार्य करने निर्देश दिए। भीषण गर्मी को ध्यान में रखते हुए मंत्री श्री यादव ने अस्पताल परिसर में शुद्ध पेयजल की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही वार्डो में कूलर एवं पंखों की पर्याप्त व्यवस्था करने तथा मरीजों और उनके परिजनों को गर्मी से राहत देने के लिए आवश्यक आवश्यक व्यवस्था करने कहा गया। निरीक्षण के दौरान मंत्री गजेन्द्र यादव ने अस्पताल में भर्ती मरीजों के परिजनों से भी बातचीत किए और अस्पताल में मिल रही सुविधाओं के बारे में जानकारी लिए।

ग्रीष्मकाल में विद्युत अवरोध संबंधी शिकायतों के लिए रात्रिकालीन हेल्पलाइन नंबर जारी

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सेल- भिलाई इस्पात संयंत्र के नगर सेवा विभाग अंतर्गत नगर विद्युत अभियांत्रिकी विभाग द्वारा ग्रीष्मकाल के दौरान टाउनशिप निवासियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए रात्रिकालीन विद्युत अवरोध संबंधी शिकायतों के पंजीकरण हेतु विशेष व्यवस्था की गई है। इस पहल का उद्देश्य बढ़ती गर्मी के मौसम में उपभोक्ताओं को त्वरित एवं सुगम शिकायत निवारण सुविधा प्रदान करना है।

नगर विद्युत अभियांत्रिकी विभाग द्वारा रात्रि पाली में दूरभाष के माध्यम से शिकायत दर्ज करने के लिए दो हेल्पलाइन नंबर निर्धारित किए गए हैं, जिनके माध्यम से उपभोक्ता अपनी विद्युत संबंधी समस्याओं की सूचना सीधे विभाग तक पहुँचा सकते हैं। यह सुविधा विशेष रूप से रात्रि 10:00 बजे से प्रातः 6:00 बजे तक उपलब्ध रहेगी।

इस संबंध में टाउनशिप के समस्त उपभोक्ताओं से अनुरोध किया गया है कि वे रात्रिकालीन अवधि में किसी भी प्रकार की विद्युत अवरोध संबंधी शिकायत दर्ज कराने हेतु दूरभाष क्रमांकः 0788-285-7162 एवं 0788-285-8181 का उपयोग करें। उल्लेखनीय है कि नगर सेवा विभाग ने आश्वस्त किया है कि प्राप्त शिकायतों के त्वरित निराकरण हेतु आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित की गई है, जिससे ग्रीष्मकाल में निर्बाध विद्युत आपूर्ति बनाए रखने में सहायता मिलेगी।

आईटीआई कर्मचारी अधिकारी संघ के संभाग व जिला अध्यक्षों का निर्विरोध निर्वाचन

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

छत्तीसगढ़ आईटीआई कर्मचारी अधिकारी संघ द्वारा संभाग अध्यक्ष एवं जिला अध्यक्षों का निर्वाचन 26 अप्रैल 2026 को आईटीआई भिलाई में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह निर्वाचन प्रक्रिया निर्वाचन अधिकारी विजय लहरे (महामंत्री, छत्तीसगढ़ प्रदेश तृतीय वर्ग शासकीय कमर्चारी संघ) तथा सहायक निर्वाचन अधिकारी जयंत साहू के निर्देशन में आयोजित की गई।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में संतोष वर्मा (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, आईटीआई कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन एवं महामंत्री, छत्तीसगढ़ प्रदेश तृतीय वर्ग शासकीय कमर्चारी संघ) उपस्थित रहे। इसके अलावा हरि शर्मा, भानु प्रताप यादव, शिवदयाल घृतलहरे, धर्मेंद्र देशमुख तथा गोरख प्रसाद की गरिमामयी उपस्थिति रही।

निर्वाचन में विभिन्न जिलों के अध्यक्ष निविरीध चुने गए। दुर्ग जिला अध्यक्ष के रूप में जुबेल लकड़ा, बालोद से शेखर साहू, राजनांदगांव से विजय कुमार सिंह, बेमेतरा से आशा मारकंडे, छुईखदान-गंडई-खैरागढ़ से गौकरण, अंबागढ़ चौकी से शशिकांत तथा कबीरधाम से गोल चंद बंजारे को जिम्मेदारी सौंपी गई।

वहीं दुर्ग संभाग अध्यक्ष के रूप में चंद्रकांत साहू का निविरीध चयन किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन हितेंद्र साहू एवं केवल वर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में संघ के सदस्य उपस्थित रहे और नव-निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई दी।

मरोदा पुरैना मंडल भाजपा की बैठक में स्थानीय मुद्दों को मुखरता से उठाने का निर्णय

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

भारतीय जनता पार्टी मरोदा-पुरैना मंडल पदाधिकारियों व शक्ति केंद्र प्रमुखों की एक महत्वपूर्ण बैठक वृंदावन नगर,डुण्डेरा स्थित गोविंद होटल में संपन्न हुई बैठक में मंडल अंतर्गत सभी रिसाली निगम के अंतर्गत वार्डों में स्थानीय मुद्दों को लेकर सक्रिय एवं मुखर रहने के साथ ही केंद्र की मोदी सरकार एवं राज्य की विष्णु देव साय सरकार की योजनाओं के लाभार्थियों से निरंतर संपर्क बनाए रखने का संकल्प लिया गया।

बैठक का आयोजन मंडल भाजपा प्रभारी एवं प्रदेश झुग्गी-झोपड़ी सह संयोजक दिनेश देवांगन की प्रमुख उपस्थिति में हुआ, जिसकी अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष राजू राकेश जंघेल ने की। इस दौरान मंडल पदाधिकारियों, शक्ति केंद्र प्रभारियों एवं पाषर्दों तथ्य कार्यकर्ताओं की सक्रिय सहभागिता रही। बैठक को संबोधित करते हुए मंडल प्रभारी दिनेश देवांगन ने कहा कि केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं राज्य में विष्णु देव साय के नेतृत्व में गरीब, महिला एवं किसानों के हित में अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं। इन योजनाओं के माध्यम से पार्टी की विचारधारा को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना प्रत्येक कार्यकर्ता का दायित्व है। उन्होंने आगामी स्थानीय चुनावों को ध्यान में रखते हुए अभी से रणनीति बनाकर कार्य करने तथा संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने पर विशेष जोर दिया। मंडल अध्यक्ष राजू जंघेल ने निर्देशित किया कि मंडल के प्रत्येक बूथ पर प्रतिमाह मन की बात कार्यक्रम का नियमित आयोजन किया जाए तथा अधिक से अधिक लोगों को इससे जोड़ा जाए। बैठक का संचालन महामंत्री नरेंद्र निर्मलकर ने किया।

बैठक में रिसाली नगर निगम के विधायक प्रतिनिधि गोविंद साहू, मंडल महामंत्री पुनाराम कलिहारी, जिला कार्यकारिणी सदस्य एम. लक्ष्मण राव,पार्षद खिलेंद्र कुमार चन्द्राकर वार्ड 55 ईश्वरी साहू वार्ड 25, सविता देवांगन वार्ड 14, मंडल मंत्री श्रीमती शेष जांगड़े, महिला मोर्चा अध्यक्ष शिखा तिवारी, केशव महिपाल, दिलीप कुमार सोनी, अंचल यादव, रंजना, आरती पाण्डेय, अंजू देवांगन, इन्द्रजीत सोनवानी, योगेश महिपाल, श्रीमती संध्या वर्मा, डी. साई, डी. बालाजी, लखन नाग, नारायण निर्मलकर जिला झुग्गी झोपड़ी सह संयोजक दीपक सिन्हा, रजन कुमार सिन्हा, अम्बर लाल श्रीवास्तव एवं प्रेमलाल निर्मलकर सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

!! न्यायालय तहसीलदार भिलाई नगर, तहसील जिला-दुर्ग !!

-:: ईश्तहार ::-

रा.प्र.क्रं. 202604101000028/अ-6/ वर्ष 2024-25

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक भूपेन्द्र कुमार उइके पिता स्व० रुहेला राम उइके निवासी कोहका द्वारा ग्राम कोहका प.ह.नं. 45 स्थित भूमि ख.नं. 782 रकबा 0.020 हे. भूमि आवेदक के पिता के नाम पर दर्ज है भूमिस्वामी की मृत्यु हो जाने से भूमिस्वामी का नाम विलोपित कर उनके विधिक वारीसानो का नाम दर्ज किये जाने के संबंध में आवेदन-पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त संबंध में पर जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 05.05.2026 तक या उसके पूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदन पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 27.04.2026 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के मुहर से जारी किया गया है।

अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर, तहसील व जिला-दुर्ग

-:: ईश्तहार ::-

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि इस न्यायालय का रा.प्र.क्रं. 202604101000157/अ-6/वर्ष 2025-26 में आवेदिका/आवेदक - राजेश जैन आ./ध.प. स्व. करमचंद जैन निवासी लालपुर रायपुर तह. रायपुर व जिला रायपुर द्वारा ग्राम-खेदामारा प.ह.नं. 11 रा.नि.मं. जेवरा सिरसा व जिला दुर्ग स्थित भूमि स्वामी हक की भूमि खसरा नं. 288 रकबा 0.38 हे. है। जो भूमिस्वामी करम चंद जैन वगैरह के नाम सामिलात खाते पर के नाम पर दर्ज है। जिसमें भूमिस्वामी करम चंद जैन की मृत्यु दिनांक 26/01/2020 को फौत हो जाने के कारण मृतक का नाम खाते से विलोपित कर उसके वैध वारिसानो का नाम दर्ज किये जाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतः उपरोक्त भूमि फौती नामांतरण किये जाने पर जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 18/05/2026 तक या उसके पूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदन पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 23/04/2026 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के मुहर से जारी किया गया है।

अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

राजनांदगांव के 'श्री देव आनंद जैन शिक्षण संघ' मामले में ईओडब्ल्यू के निर्देश दरकिनार?

जनता पूछ रही–आखिर कार्रवाई क्यों नहीं?

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

छत्तीसगढ़ के आर्थिक अपराध अन्वेषण एवं एंटी करप्शन ब्यूरो द्वारा एक गंभीर मामले में दिए गए स्पष्ट निर्देशों के बावजूद, कार्रवाई न होना अब बड़े सवाल खड़े कर रहा है। मामला राजनांदगांव के 'श्री देव आनंद जैन शिक्षण संघ' में हुई कथित वित्तीय अनियमितताओं से जुड़ा है।

क्या है मामला?

ईओडब्ल्यू/एसीबी, रायपुर द्वारा दिनांक 25 नवंबर 2025 को एक पत्र (क्रमांक-ब्यूरो/शिका./आर-660(25)/म-19528/2025) जारी किया गया था। यह पत्र रजिस्ट्रार, फर्म एवं संस्थाएं, इंद्रावती भवन, नवा रायपुर को संबोधित था।

इस पत्र में स्पष्ट रूप से 'श्री देव आनंद जैन शिक्षण संघ, राजनांदगांव' के अध्यक्ष प्रवीण श्रीमाल और सचिव गौतम चंद पारख के विरुद्ध शिकायत का जिक्र किया गया है। यह शिकायत पूर्व संपादक नरेंद्र कुमार जैन द्वारा दर्ज कराई गई थी, जिसमें संघ द्वारा वर्ष 2021 बनाए गए और 2022 में बनाए गए अनधिकृत सदस्यों के सदस्यता शुल्क में भारी अनियमितताओं का आरोप लगाया गया है।

सदस्यों में छाया आक्रोश : क्या 'दबाव' में है प्रशासन?

ईओडब्ल्यू/एसीबी जैसे सक्षम निकाय द्वारा मामले को जांच के लिए भेजे जाने के इतने समय बाद भी ठोस कार्रवाई का न होना स्थानीय लोगों के बीच चर्चा का विषय बना हुआ है। जनता अब सवाल पूछ रही है कि:

किसके दबाव में है कार्रवाई : इतने स्पष्ट निर्देशों के बाद भी फाइल ठंडे बस्ते में क्यों है? क्या प्रभावशाली लोगों का राजनीतिक या प्रशासनिक संरक्षण इस मामले को दबा रहा है?

भ्रष्टाचार पर मौन क्यों: जब शिकायत सदस्यता शुल्क में हेराफेरी की है, तो जांच में देरी से क्या यह संकेत नहीं जाता कि सिस्टम खुद अनियमितताओं को संरक्षण दे रहा है?

पारदर्शिता पर सवाल : क्या विभाग के अधिकारी मामले की गंभीरता को समझने में असमर्थ हैं, या फिर उन्हें भी इस 'गड़बड़ी' में हिस्सेदार माना जाए?

निष्पक्ष जांच की मांग

स्थानीय निवासियों का कहना है कि यदि एंटी-करप्शन ब्यूरो स्वयं जांच के निर्देश देता है, तो उस पर अमल करना रजिस्ट्रार कार्यालय की प्राथमिकता होनी चाहिए। देरी का मतलब है सबूतों के साथ छेड़छाड़ की गुंजाइश छोड़ना।

फिलहाल, राजनांदगांव की जनता और संस्था के सदस्यों के साथ शिकायतकर्ता, प्रशासन से अविलंब निष्पक्ष जांच रिपोर्ट सार्वजनिक करने और दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। अब देखना यह है कि क्या शासन-प्रशासन इस मामले में चुप्पी तोड़ता है, या यह मामला भी फाइलों के ढेर किसी गांधी के चित्र वाले वजन से दबकर रह जाएगा।

निगम आयुक्त के अवैधानिक निणर्यों के विरोध में भाजपा पाषर्दो ने जिलाधीश को सौंपा ज्ञापन

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग-भिलाई

नगर पालिक निगम भिलाई की सामान्य सभा द्वारा 25 मार्च को पारित संकल्प के उल्लंघन के विरोध में भारतीय जनता पार्टी के पाषर्दो ने कड़ा रुख अपनाया है। भाजपा संगठन द्वारा गठित 6 सदस्यीय समिति के संयोजक वरिष्ठ पार्षद श्याम सुंदर राव के नेतृत्व में भाजपा पाषर्दो के प्रतिनिधिमंडल ने जिलाधीश, दुर्ग से भेंट कर विस्तृत ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में उल्लेख किया गया कि सामान्य सभा में छत्तीसगढ़ नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 54(2) के अंतर्गत आवश्यक बहुमत से आयुक्त को पद से हटाने का प्रस्ताव पारित किया जा चुका है। इसके बावजूद आयुक्त द्वारा निरंतर नीतिगत एवं वित्तीय निर्णय लिए जा रहे हैं, जिनमें ठेकेदारों को भुगतान जैसी कायर्वाहियां भी शामिल हैं, जो स्पष्ट रूप से सामान्य सभा के निर्णय का उल्लंघन है।

भाजपा पाषर्दो ने इसे लोकतांत्रिक व्यवस्था और जनप्रतिनिधियों के अधिकारों का सीधा हनन बताते हुए जिलाधीश से मांग की कि— 25 मार्च के पश्चात आयुक्त द्वारा लिए गए सभी निणर्यों को शून्य घोषित किया जाए, आयुक्त को तत्काल प्रभाव से प्रशासनिक कार्य करने से रोका जाए, तथा शासन से निर्देश प्राप्त होने तक किसी सक्षम अधिकारी की नियुक्ति की जाए। प्रतिनिधिमंडल ने चेतावनी दी कि यदि इस गंभीर विषय पर शीघ्र कार्रवाई नहीं की गई, तो भाजपा पार्षद लोकतांत्रिक तरीके से आंदोलन करने को बाध्य होंगे। भाजपा पाषर्दो ने जिलाधीश से अपेक्षा की है कि वे मामले की गंभीरता को समझते हुए त्वरित एवं वैधानिक कार्रवाई सुनिश्चित करेंगे। ज्ञापन सौपने वालों में श्याम सुंदर राव, महेश वर्मा, वीणा चंद्राकर, पीयुष मिश्रा, संतोष मौर्या, विनोद चेलक, सरिता बघेल, शकुंतला साहू, ईश्वरी, धर्मेन्द्र दिवाकर, सत्यवती जायसवाल सहित अन्य पार्षद उपस्थित थे।

पूर्व मंत्री के बेटे की मौत से सनसनी

परिजनों ने पत्नी और कथित प्रेमी पर लगाए गंभीर आरोप

मृतक जयेन्द्र साहू

मृतक की पत्नी किरण साहू

ठेकेदार अनुज द्विवेदी

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

राजधानी रायपुर के मोवा क्षेत्र में पूर्व राज्यमंत्री धनीराम साहू के 45 वर्षीय पुत्र जयेंद्र साहू की संदिग्ध परिस्थितियों में आत्महत्या ने हड़कंप मचा दिया है। घटना के बाद परिजनों ने मृतक की पत्नी और उसके कथित प्रेमी पर मारपीट, प्रताड़ना और आत्महत्या के लिए उकसाने जैसे गंभीर आरोप लगाए हैं।

जानकारी के अनुसार, घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची, जहां घर के भीतर जयेंद्र साहू का शव बरामद किया गया। मृतक के बड़े भाई भागवत साहू ने पुलिस को बताया कि जयेंद्र ने खुद को कमरे में बंद कर लिया था। दरवाजा खोलने पर वह मृत अवस्था में मिला, जिसके बाद तत्काल पुलिस को सूचना दी गई।

घटना के बाद पूर्व मंत्री धनीराम साहू स्वयं थाना पहुंचे और लिखित शिकायत दर्ज कराई। उन्होंने आरोप लगाया कि उनके बेटे को उसकी पत्नी किरण साहू और उसके कथित प्रेमी द्वारा लगातार मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा था।

परिजनों का दावा है कि जयेंद्र अपनी पत्नी से लंबे समय से परेशान था। बताया जा रहा है कि कुछ समय पूर्व उसकी पत्नी एक मकान ठेकेदार अनुज द्विवेदी के साथ घर छोड़कर चली गई थी। इसके बाद से पारिवारिक विवाद और तनाव बढ़ गया था।

मामले में आर्थिक विवाद की बात भी सामने आई है। परिवार का आरोप है कि मृतक के नाम की जमीन को पत्नी द्वारा करीब 1 करोड़ 36 लाख रुपये में बेच दिया गया और राशि अपने पास रख ली गई, जिससे विवाद और गहरा गया।

पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। अधिकारियों का कहना है कि मामले की हर पहलू से जांच की जा रही है और परिजनों द्वारा लगाए गए आरोपों के आधार पर वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

इस घटना ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं—क्या यह महज आत्महत्या है या लगातार प्रताड़ना का परिणाम? इसका जवाब अब पुलिस जांच के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा।

विकास कार्यों की विस्तृत समीक्षा, कार्य में लापरवाही पर ठेकेदारों और अभियंताओं को नोटिस देने के निर्देश

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

नगर पालिक निगम भिलाई के आयुक्त राजीव कुमार पांडेय ने निगम कार्यालय में विकास कार्यों की प्रगति को लेकर विभागवार विस्तृत समीक्षा बैठक ली। बैठक में शहर के विभिन्न वार्डों में चल रहे निर्माण कार्यों, अधोसंरचना विकास और जनहित की परियोजनाओं की वर्तमान स्थिति का जायजा लिया गया।

आयुक्त ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि विकास कार्यों में किसी भी प्रकार की देरी या गुणवत्ता से समझौता स्वीकार नहीं किया जाएगा। बैठक के मुख्य रूप से रोड निर्माण, सीवरेज लाइन, नाली निर्माण एवं बकाया कार्यों में गति लाने के निर्देश दिए गए हैं। आयुक्त ने सभी ठेकेदारों और विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि लंबित कार्यों को समय-सीमा के भीतर पूर्ण करें। मानसून पूर्व के आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता देने पर जोर दिया गया।

समीक्षा के दौरान जिन कार्यों की प्रगति धीमी पाई गई, उनके प्रति आयुक्त ने गहरी नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने संबंधित ठेकेदारों और उत्तरदायी अभियंताओं को तत्काल कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश मुख्य अभियंता अजीत कुमार तिग्गा को दिए हैं। आयुक्त ने अधिकारियों को फील्ड विजिट बढ़ाने और निर्माण सामग्री की गुणवत्ता की नियमित जांच करने को कहा है। उन्होंने कहा कि कार्य पूर्ण होने पर भुगतान की प्रक्रिया में देरी न की जाए, लेकिन यदि कार्य में सुस्ती बरती गई तो पेनाल्टी लगाने और ब्लैक लिस्ट करने की कार्रवाई भी की जाएगी।

निगम आयुक्त ने कहा है कि "नगरवासियों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना हमारी प्राथमिकता है। विकास कार्यों में अनावश्यक विलंब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जो भी एजेंसी या अधिकारी कार्य के प्रति उदासीनता बरतेंगे, उन पर कड़ी दंडात्मक कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।" बैठक में निगम के मुख्य अभियंता अजीत कुमार तिग्गा, अधीक्षण अभियंता वेशराम सिंहा, जोन आयुक्त, कायर्पालन अभियंता, सहायक अभियंता, उप अभियंता एवं बड़ी संख्या में ठेकेदार उपस्थित रहे।

दिलीप कुमार ने सेल के मुख्य सतर्कता अधिकारी (सीवीओ) के रूप में कायर्भार ग्रहण किया

नई दृष्टिबिंदु / नईदिल्ली

इंडियन रेलवे सर्विस ऑफ मैकेनिकल इंजीनियर्स (आईआरएसएमई) के वरिष्ठ अधिकारी दिलीप कुमार ने 27 अप्रैल, 2026 को स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) के मुख्य सतर्कता अधिकारी (सीवीओ) के रूप में कायर्भार ग्रहण किया है। उनके पास ट्रेन संचालन, रोलिंग स्टॉक रखरखाव और मानव संसाधन प्रबंधन में दो दशकों से अधिक का व्यापक अनुभव है।

श्री कुमार ने भारतीय रेलवे में कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है, जिनमें पूर्व मध्य रेलवे (ईसीआर) के अपर मंडल रेल प्रबंधक और बिहार के नालंदा में हरनौत के मुख्य कारखाना प्रबंधक का पद शामिल है। उन्हें कई नवाचारों जैसे पूर्व मध्य रेलवे की पहली ISO 9001 प्रमाणित ट्रेन, वैगन्स में इन-सिटु (in-situ) व्हील रिप्लेसमेंट तकनीक की शुरुआत करने और राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित मधुबनी रेलवे स्टेशन सौंदर्यीकरण परियोजना का श्रेय जाता है।

आईआईटी, बीएचयू से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बी.टेक श्री कुमार को 'राष्ट्रीय उत्कृष्ट सेवा पुरस्कार' (2016) और सर्वश्रेष्ठ नवाचार के लिए 'रेलवे बोर्ड का उत्कृष्टता प्रमाण पत्र' (2018-19) से सम्मानित किया जा चुका है। उनके अंतरराष्ट्रीय अनुभव में इनसीड (INSEAD) सिंगापुर और आईक्लिफ (ICLIF) कुआलालंपुर, मलेशिया से उन्नत प्रबंधन कार्यक्रम, और एआरआई (ARI) शिकागो, यूएसए में वैगन बोगी डिजाइन का विशेष प्रशिक्षण शामिल है।

अहिवारा क्षेत्र में अवैध संचालित जर्दा युक्त पान मसाला फैक्ट्री सील

दुर्ग। नियंत्रक खाद्य एवं औषधि प्रशासन छत्तीसगढ़ रायपुर के निर्देशानुसार उपसंचालक डॉ. मनोज दानी एवं अभिहीत अधिकारी जितेन्द्र कुमार नेले के मार्गदर्शन में खाद्य एवं औषधि प्रशासन दुर्ग की टीम द्वारा अहिवारा क्षेत्र में निरीक्षण किया गया। उप संचालक खाद्य एवं औषधि प्रशासन से प्राप्त जानकारी अनुसार निरीक्षण के दौरान व्यापारियों ने बताया कि ग्राम भिरेभाठ, थाना नंदिनी, जिला दुर्ग में अवैध रूप से स्वास्थ्य को हानि पहुचाने वाला जर्दा युक्त पान मसाला का निर्माण किया जा रहा है। मौके पर विक्रय हेतु तैयार 51 कट्टी जर्दा युक्त पान मसाला बरामद किया गया, जिसकी अनुमानित कीमत 3,18,240 रुपये है। फैक्ट्री में कार्यरत कर्मचारियों से उत्पाद के निर्माणकर्ता के संबंध में पूछताछ करने पर वे कोई जानकारी नहीं दे सके। निर्माणकर्ता की अनुपस्थिति के कारण, अभिहीत अधिकारी के निर्देश पर एरिया अधिकारी रिचा शर्मा द्वारा उक्त निर्माण स्थल को खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 (संशोधित 2011) के तहत तत्काल प्रभाव से सील कर दिया गया है।

व्याख्याता गीतिका शर्मा को मिली पीएचडी की उपाधि

राजनांदगांव। स्कूल ऑफ एजुकेशन मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर छग से व्याख्याता गीता शर्मा ने पीएचडी की उपाधि प्राप्त की हैं। गीतिका शर्मा व्याख्याता डॉ. राममनोहर लोहिया शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रायपुर में पदस्थ है। उन्होनें अपने शोध शीर्षक "श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के अध्ययन का विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन" को स्पष्ट करते हुए बताया कि गीता के ज्ञान से छात्रों में आत्मबोध, विवेकशीलता, सहानुभूति, सत्यनिष्ठा एवं जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। साथ ही गीता अध्ययन करने वाले और न करने वाले विद्यार्थियों के मूल्यों में महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देता है। उन्होंने अपना शोध कार्य मैट्स विश्वविद्यालय रायपुर की शोध निर्देशिका डॉ. संगीता शराफ के निर्देशन एवं डॉ. परविंदर हंसपाल व डॉ. संजीत तिवारी के मार्गदर्शन में पूर्ण किया है। रायपुर गुड़यारी निवासी डॉ. गीतिका शर्मा फतेह चंद शर्मा एवं गिरिजा शर्मा की पुत्री व रामप्रसाद शर्मा एवं कमला शर्मा की पुत्रवधु तथा श्रवण शर्मा की धर्मपत्नि हैं। उनके इस कामयाबी पर स्कूल के स्टाफ और शुभचिंतको ने शुभकानाएं देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

परंपरा को जिंदा रखने बैलगाड़ी में निकाली बारात

नई दृष्टिबिंदु / गरियाबंद

अंचल में एक बार फिर पुरानी परंपराओं की खुशबू देखने को मिली, जब एक युवक ने अपनी शादी को खास बनाने के साथ-साथ संस्कृति को सहेजने का संदेश दिया। कपसीडीह से मुड़तराई तक निकली यह बारात किसी आधुनिक गाड़ियों में नहीं, बल्कि पारंपरिक बैलगाड़ी में निकाली गई।

दूल्हा पवन ध्रुव, पिता रमेश्वर ध्रुव, ने इस अनोखी पहल के जरिए समाज को यह संदेश दिया कि आधुनिकता के दौर में भी अपनी जड़ों से जुड़े रहना जरूरी है। बैलगाड़ी में सजी-धजी बारात ने गांव-गांव में लोगों का ध्यान खींचा और हर कोई इस पहल की सराहना करता नजर आया।

इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य था हमारी पुरानी परंपरा और संस्कृति को बचाना और लोगों को उसके प्रति जागरूक करना।

ध्रुव परिवार एवं युवा साथियों ने मिलकर इस विचार को साकार रूप दिया। बारात में शामिल प्रमुख लोगों में रमेश्वर ध्रुव, चैनसिंग ध्रुव, रोशन साहू, कामता साहू, हरख ध्रुव, दयाराम, कोमल तारक, सुरेंद्र साहू, कृष्ण साहू, दुष्यंत, मेघराज साहू (जनसेवक), नंदकुमार सहित कई ग्रामीण मौजूद रहे। दूल्हा पवन ध्रुव पेशे से इलेक्ट्रिशियन हैं और साथ ही खेती-किसानी का काम भी करते हैं। उनकी इस पहल ने यह साबित किया कि साधारण जीवन जीने वाले लोग भी समाज में बड़ा संदेश दे सकते हैं।

आज जब शादियों में दिखावा और फिजूल खर्च बढ़ता जा रहा है, ऐसे में यह बैलगाड़ी बारात एक मिसाल बनकर सामने आई है। यह न केवल पर्यावरण के अनुकूल है, बल्कि हमारी लोक संस्कृति को भी जीवित रखने का सशक्त प्रयास है। कुल मिलाकर, यह बारात सिर्फ एक शादी नहीं, बल्कि संस्कृति संरक्षण की प्रेरक कहानी बन गई है।

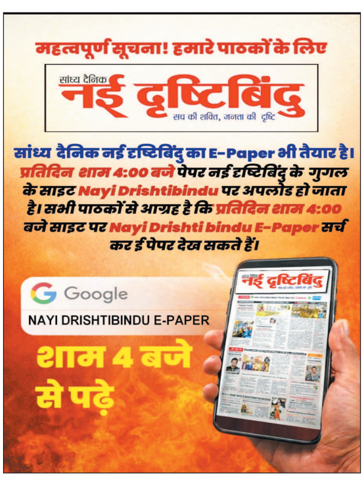

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100